मेरीखेती

अक्टूबर, 2024 । मूल्य : रु49

खेत खलियान

बागवानी फसलें

मशीनरी

पशुपालन–पशुचारा

औषधीय खेती

प्रगतिशील किसान

www.merikheti.com | YouTube

विषय सूची

सम्पादकीय	
सलाहकार मंडल	
खेत खलियान	01 - 07
बागवानी फसलें	08 - 11
मशीनरी	12 - 16
कृषि सलाह	17 - 21
पशुपालन–पशुचारा	22
औषधीय खेती	23 - 24
सम्पादकीय	25 - 26
प्रगतिशील किसान	27

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

हे राम, क्या करे किसान

देश के किसानों के सामने बेइंतहां चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। फसलों की बुवाई का समय बदल गया है। बुबाई के समय पर भी उपयुक्त तापमान नहीं होता। बुबाई हो भी जाए और फसल अच्छी हो तो कीड़े पीछा नहीं छोड़ते। कीड़े भी अनाप–शनाप दवाएं डाल कर रोक दिए जाएं तो अति की बरसात और सूखे जैसी स्थिति पीछा नहीं छोड़ती। सब कुछ करने के बाद भी जरूरत भर अन्न मिलने की गारंटी नहीं। जब पेट भर अन्न और जरूरतों की पूर्ति की गारंटी सरकार नहीं दिला सकती तो किसान के बच्चे क्यों खेती में खपें? जब किसान किसानी से बेरुखी दिखाने लगे तो डेढ़ अरब की ओर बढ़ रही आबादी का पेट भरने की समस्या का समाधान क्या होगा?

चालू सीजन की धान की फसल में तना छेदक कीट, धान की सुन्डी ने धान के पौधों के अनेक कल्ले बेकार कर दिए हैं। इन केल्लों में न बाली बनेगी न दाना पड़ेगा। यानी कीट प्रभाव के अनुरूप 10 से 20 फीसदी नुकसान फसल आने से दो माह पूर्व हो चुका है। इस बार तो कयी इलाकों में हल्की बारिश से ही ख्त्म हो जाने वाला पत्ती लपेटकर कीट धान की पत्तियों को लपेटे जा रहा है। जब पत्ती खुली नहीं होगी तो प्रकाश संश्लेषण नहीं होगा और परिणाम स्वरूप उत्पादन प्रभावित होगा। इस नुकसान का प्रतिशत भी 10 फीसदी तक हो सकता है। राजस्थान के कयी इलाकों में अति वृष्टि से सरसों के अलावा कभी कभार मिल सकने वाली बाजार की फसल कयी इलाकों में बर्बाद हो चुकी है। संयमित जीवन जीने वाले, मितव्यई राजस्थान के किसान परिवार सरसों की फसल से होने वाली आय को बेहद सोच समझ कर खर्चते हैं कि यदि अगले बरस फसल कमजोर रही तो परिवार का पालन पोषण कैसे होगा। मध्य प्रदेश और बिहार के हालात किसी से छिपे नहीं हैं। यदि खेती से जरूरतें पूरी होतीं तो यहां की आबादी अन्य राज्यों में पलायन कर मजदूरी को विवश न होती।

फसलों में एक ओर प्रतिबंधित दवाओं का प्रयोग बढ़ रहा है। गन्ने के कीट मारने में प्रयुक्त होने वाली कोराजिन दवा से भी धान के कीट नहीं मर रहे हैं। साथ में कर्टेप हाइड्रोक्लोराइड दवा भी मिलानी पड़ रही है। कोराजिन जिस देश में बनती है वहां इसके दुष्प्रभावों के चलते प्रतिबंधित है लेकिन भारत में यह दवा अरबों की खप रही है। इसके दूरगामी प्नभाव निर्यात पर पड़ेगा। निर्यात में जरा सी अड़चन पैदा होते ही कारोबारी खुराफात शुरू होगी। निर्यातकों पर सरकार का नियंत्रण नहीं। लिहाजा वह फसल मनमानी रेट पर खरीदेंगे। करनाल मंडी में बैठे चंद निर्यातक होटल में सालाना पार्टी कर खरीद और मुनाफा की रणनीति तय करेंगे और किसान उनके हाथों की कठपुतली बनकर रह जाएगा। ऐसा पूर्व में 1 साल हो चुका है। धान की 1509 किस्म रिलीज होने के बाद गल्फ देशों में भारत के चावल में कैंसर कारक तत्वोंकी मौजूदगी का शोर मचाया गया और भारतीय बासमती व किसानों की जमकर बेकदरी की गई।

सेहत के नजरिए से देखें तो मानव स्वास्थ्य पर भी फसलों में दावाओं का अंधाधुंध प्रयोग घातक हो रहा है। सब्जियों पर भी ऐसे जहर डाले जा रहे हैं जिनका असर महीनों तक खत्म नहीं होता। उपभोक्ताओं कोइस बात का इल्म नहीं होता। कयी मामलों में छोटे बच्चे और सेहतमंद युवाओं की किडनी फेलियर व हार्ट अटैक से मौत लोगों को चौंका जाती है। दवाओं के रैपर पर लाल, नीला, पीला व हरा चिन्ह बना होता है। सब्जियों पर हरे चिन्ह वाली सुरक्षित दवा छिडकनी चाहिए लेकिन अधिकतर लाल चिन्ह वाली घातक दवा छिड़की जाती है। दुकानदार चाहता है कि किसान शिकायत लेकर वापस न आए। इसलिए वह जहरीले से जहरीला जहर देकर इतिश्री करता है। इसके घातक परिणाम हर घर में मौजूद उपभोक्ता झेलते हैं। उन्हें पता ही नहीं होता की जो लीची– से ब वह खा रहे हैं उससे सेहत बनने के बजाय बिगड़ रही है। किसने की माली हालतमें सुधार के लिए उपभोक्ताओं को ही जागृत होना होगा। सालाना खाने पीने क्या चीजें सीधे किसानों से लेनी पड़ेंगी। कम कीटनाशकों व जैविक तरीके से तैयार फसल अच्छी कीमत पर खरीदने की गारंटी के समझौते हर क्षेत्र में करने होंगे।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

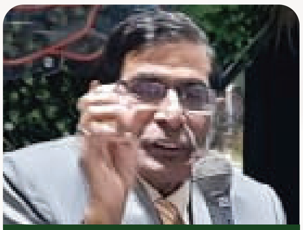

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

शून्य बजट प्राकृतिक खेती क्या हैं? इसके महत्व, उद्देश्य, स्तम्भ और लाभ क्या हैं?

आज के आधुनिक युग में जहां हर चीज आधुनिक हो गयी हैं। खेती भी आधुनिक हो गयी हैं जिससे की खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों को अधिक इस्तेमाल हो रहा हैं। जिससे उत्पादन तो अधिक हो गया हैं परंतु भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती जा रहीं हैं। किसानों को ऐसे में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना चाहिए। आज यहां हम आपको शून्य बजट प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी देंगे।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती क्या हैं?

शून्य बजट प्राकृतिक खेती को इंग्लिश में Zero Budget Natural Farming के नाम से जाना जाता हैं। जीरो बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF) एक प्रकार की खेती है जिसमें रसायनों (जैसे रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक या महंगे बीज) का उपयोग नहीं किया जाता है बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके खेती की जाती है। शून्य बजट प्राकृतिक खेती उद्देश्य किसानों को कर्ज मुक्त खेती के लिए प्रोत्साहित करना और उत्पादन लागत को कम करना हैं।

प्राकृतिक खेती का मुख्य उद्देश्य

- प्राकृतिक खेती के तरीके, जैसे जीरो बजट प्राकृतिक खेती, किसानों को इनपुट खरीदने के लिए कर्ज की जरूरत को कम करते हैं।
- यह खेती की लागत को कम करता है और साथ ही बीज, उर्वरक, कीटनाशकों और अन्य बाहरी रसायनों पर निर्भरता कम करता है।
- प्राकृतिक खेती को जीरो बजट से लाभ मिलता है क्योंकि यह जहरीले पदार्थों के एन्वायरोमेंटली और दीर्घकालीन प्रजनन असरों से बचाता है।
- जीरो बजट प्राकृतिक खेती अभियान का उद्देश्य श्रसायनिक कीटनाशकों का उपयोग खत्म करना और कृषि संबंधित प्रथाओं को बढ़ावा देना है।
- यह मिट्टी सुरक्षा, बीज तीनता को बढ़ाता है और फसल की गुणवत्ता बढ़ाता है।

शून्य बजट प्राकर्तिक खेती के स्तम्भ

जीरो बजट प्राकृतिक खेती के मुख्य 4 स्तम्भ हैं। जो पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित हैं। इन स्तम्भों का उद्देश्य खेती को बाहरी निवेश से मुक्त करना और प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग करके फसलों का उत्पादन करना है। ये चार स्तम्भ इस प्रकार हैं।

1.जीवामृत

जीवामृत गाय के गोबर, गौमूत्र, गुड़, बेसन और मिट्टी को मिलाकर तैयार किया जाने वाला मिश्रण है, जो प्राकृतिक उर्वरक का काम करता है और मिट्टी में आवश्यक सूक्ष्मजीवों को बढ़ावा देता है और फसलों की बढ़वार के लिए पोषक तत्व प्रदान करता है। यह रासायनिक उर्वरकों का प्राकृतिक विकल्प है। जीवामृत मिट्टी को उपजाऊ बनाता है और पौधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है। जीवामृत बनने के लिए सामग्री निम्नलिखित है – 10 किलो देशी गाय का मूत्र, 8 से 10 लीटर देशी गाय का मूत्र, 1.5 से 2 किलो बेसन, 180 लीटर पानी, 500 ग्राम मिट्टी आदि।

2.बीजामृत:

बीजामृत बीजों को तैयार करने के लिए उपयोग किया जाने वाला मिश्रण है, जिसमें गाय का गोबर, गौमूत्र, नीम की पत्तियां आदि होते हैं। यह बीजों को रोगों से बचाता है और उनकी अंकुरण क्षमता बढ़ाता है। इस उपचार का इस्तेमाल नए पौधों के बीज रोपण के दौरान किया जाता है और बीज अमृत की मदद से नए पौधों की जड़ों को कवक मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारियों और बीजों की बीमारियों से बचाया जाता है। बीजामृत को बनाने के लिए 5 किलो गाय का गोबर, 5 लीटर गाय का मूत्र, 50 ग्राम बुझा हुआ चुना, 20 लीटर पानी और मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता है।

किसी भी फसल के बीजों को बीजने से पहले उन बीजों में आप बीज अमृत अच्छी तरह लगा दे और यह लगाने के बाद उन बीजों को कुछ समय सुकने के लिए छोड़ दे। इन बीजों पर लगा बीज अमृत का मिश्रण सूख जाने के बाद आप इनको जमीन में बीज सकते हो।

3. मल्चिंग (आच्छादन)

खेत की मिट्टी को घास या पत्तियों से ढक कर रखा जाता है, ताकि नमी बनी रहे और खरपतवार की समस्या कम हो। इसके अलावा जमीन से कार्बन उत्सृजन को रोकने और भूमि की जैविक कार्बन क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलती है।

प्राकृतिक खेती में इस्तेमाल होने वाली मल्चिंग–

(a) मिट्टी मल्च

खेती के दौरान मिट्टी की ऊपरी तैय को बचाने के लिए मिट्टी मल्च का प्रयोग किया जाता है और मिट्टी के चारों ओर करक लगाया जाता है। (मिट्टी की जल प्रतिधारण क्षमता को बेहतर बनाने के लिए)

(b) स्ट्रा मल्च

तूड़ी या स्ट्रा मल्च सब्जी की खेती में सबसे अधिक उपयोग किया जाता है क्योंकि यह सबसे अच्छा मलच सामग्री है। चावल की तूड़ी और कनक की तूड़ी को सब्जी की खेती के दौरान उपयोग करके किसान मिट्टी की गुणवत्ता को सुधार सकता है और अच्छी सब्जी की फसल पा सकता है।

(c) लाइव मल्चिंग

लाइव मल्चिंग प्रक्रिया में एक खेत में कई प्रकार के पौधे एक साथ लगाए जाते हैं। और यह सब एक पौधे को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, लौंग और काफी के पेड़ों को पूरी सूरज की रोशनी चाहिए।

4. वाफसा

वाफसा (मिट्टी में नमी और हवा का संतुलन): यह तकनीक मिट्टी में हवा और नमी का संतुलन बनाए रखने के लिए उपयोग की जाती है, जिससे पौधों की जड़ें बेहतर तरीके से पोषक तत्व ग्रहण कर पाती हैं। वाफसा के होने से फसल न तो अधिक वर्षा – तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में खराब होती है।

प्राकृतिक कृषि के लाभ

- प्राकृतिक कृषि में किसानों की लागत जीरो या कम होती है जिससे की आय में वृद्धि होती है।
- अनाज शुद्ध मिलता है, जिससे सेहत बेहतर होती है।
- जीरो बजट खेती के तहत किसानों पर कर्ज का बोझ भी नहीं चढ़ता, जिससे आत्महत्या की दर भी कम हुई है।
- बिजली और पानी की कम लागत से ही खेती कर सकते हैं।
- जीरो बजट कृषि में रासायनिक उर्वरक का कम उपयोग होता है। जिससे कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- किसानों की आय में वृद्धि होती है।
- जीरो बजट खेती के तहत किसानों पर कर्ज का बोझ भी नहीं चढ़ता, जिससे आत्महत्या की दर भी कम हुई है।

कुटकी (Panicum Sumatrense) की खेती: बुवाई, कटाई, और इसके पोषक तत्वों के फायदे

कुटकी (Panicum Sumatrense) एक कम अवधि वाली फसल है जो सूखे और जलभराव दोनों को सहन कर सकती है। इसे भोजन और चारे के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है और यह भारत के पूर्वी घाटों में प्रचुर मात्रा में उगाई जाती है। इस फसल का विस्तार कई क्षेत्रों में फैला है, जिसमें आदिवासी लोग, श्रीलंका, नेपाल और म्यांमार शामिल हैं। भारत में इसकी खेती मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में होती है, जबकि छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश में भी इसकी पैदावार की जाती है। यह हर आयु वर्ग के लिए लाभकारी है, कब्ज से राहत दिलाने में मदद करती है और पेट से संबंधित समस्याओं का समाधान करती है। कुटकी के पोषक तत्वों में शरीर के कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने की क्षमता होती है, यह बच्चों की वृद्धि के लिए अनुकूल है और शरीर को मजबूत बनाती है। इसका जटिल कार्बोहाइड्रेट धीरे–धीरे पचता है, जो मधुमेह रोगियों के लिए लाभकारी होता है। इसमें 8.7 ग्राम प्रोटीन, 75 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 5.3 ग्राम वसा, और 9.3 मिलीग्राम आयरन प्रति 100 ग्राम अनाज होता है। उच्च फाइबर होने के कारण यह वसा के जमाव को कम करने में मदद करता है। इसके न्यूट्रास्युटिकल तत्वों में फिनोल, टैनिन और फाइटेट्स शामिल हैं।

कुटकी की खेती के लिए जलवायु

भारत में कुटकी की खेती बड़े पैमाने पर नहीं होती। यह फसल सूखे और पानी दोनों की परिस्थिति में सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है, और 2000 मीटर तक की ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है। यह फसल 10 डिग्री सेल्सियस से कम तापमान सहन नहीं कर पाती और गर्मी के मौसम में उगाई जाती है।

कुटकी की खेती के लिए मिट्टी

कुटकी को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, जैसे रेतीली दोमट या काली कपास मिट्टी। हालांकि, उपजाऊ और कार्बनिक पदार्थों से भरपूर दोमट मिट्टी को प्राथमिकता दी जाती है। यह फसल लवणता और क्षारीयता सहन करने में सक्षम है।

कुटकी बुवाई का समय और तरीका

खरीफ सीजन में इसकी बुवाई जुलाई के पहले पखवाड़े में की जाती है, जो वर्षा पर आधारित होती है। रबी सीजन में तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में सितंबर–अक्टूबर के बीच बुवाई होती है, जबकि गर्मी के समय मई में बिहार और उत्तर प्रदेश में बुवाई की जाती है। बुवाई के दौरान पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25–30 से.मी. रखी जाती है और बीजों को 2–3 से.मी. गहराई तक बोया जाता है। पंक्ति बुवाई के लिए बीज की मात्रा 5–4 कि.ग्रा.ध्एकड़ और प्रसारण बुवाई के लिए 8–10 कि.ग्रा.ध्एकड़ होती है।

कुटकी की फसल में खाद और उर्वरक प्रबंधन

खाद और उर्वरक प्रबंधन के लिए प्रति एकड़ 4–5 टन कम्पोस्ट या गोबर की खाद का उपयोग किया जाता है। फसल में 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 12 किलोग्राम फॉस्फोरस और 8 किलोग्राम पोटाश का उपयोग किया जाता है। आधी नाइट्रोजन बुवाई के समय और शेष सिंचाई के समय दी जाती है।

खरपतवार नियंत्रण और सिंचाई

फसल में निराई और गुड़ाई के लिए, पंक्ति बुवाई वाली फसल में दो बार निराई की जाती है। पहली निराई अंकुर निकलने के 15–20 दिन बाद की जाती है और दूसरी 15–20 दिन बाद। खरीफ फसल को न्यूनतम सिंचाई की आवश्यकता होती है, जबकि ग्रीष्मकालीन फसल के लिए 2–5 सिंचाई की आवश्यकता होती है, जो मिट्टी और जलवायु पर निर्भर करती है।

कुटकी की फसल की कटाई

कटाई बुवाई के 65–75 दिन बाद की जाती है, जब बालियां परिपक्व हो जाती हैं। एक अच्छी फसल से प्रति एकड़ 8–10 क्विंटल अनाज और 15–18 क्विंटल पुआल की उपज प्राप्त होती है।

मसूर की खेती की उन्नत तकनीक के बारे में जानकारी

मसूर (लेंस क्यूलिनेरिस) एक महत्वपूर्ण दलहन फसल है जो विश्वभर में उगाई जाती है। भारत में इसकी खेती मुख्यतः उत्तरी और मध्य क्षेत्रों में की जाती है। असिचिंत क्षेत्रों में चने की खेती के बाद मसूर की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। मसूर की फसल पाले और ठण्ड के लिए अति संवदेनशील है, पर दूसरी रबी फसलों की तुलना में ये अधिक ठण्ड सहन कर सकती है। मसूर एक पौष्टिक फसल है क्योंकि यह प्रोटीन, फाइबर, कई विटामिन और खनिजों से भरपूर है। यह फसल सूखी मिट्टी में भी अच्छे से उगाई जा सकती है, इसलिए यह किसानों के लिए एक अच्छा विकल्प है। हम मसूर की खेती की पूरी जानकारी इस लेख में देंगे।

मसूर की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

मसूर एक रबी फसल है, इसलिए इसको ठंडी जलवायु पसंद है। मसूर को ठंडी जलवायु पसंद है इसलिए इस फसल अत्यधिक सर्दी को अच्छी तरह सहन कर सकती है। इसकी वानस्पतिक वृद्धि के दौरान ठंडे तापमान और परिपक्वता के समय गर्म तापमान की जरूरत होती है। यह फसल 10–25 डिग्री सेल्सियस तापमान में सबसे अच्छे से उगती है। इस फसल की वार्षिक वर्षा आवश्यकता 300–400 मि.मी. की होती है। मसूर के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है। मिट्टी का चभ 6–7.5 होना चाहिए। बीज बोने से पहले मिट्टी को खरपतवार से मुक्त करना चाहिए। भारी मिट्टी पर गहरी जुताई करने के बाद दो या तीन बार हैरो से जुताई करनी चाहिए। खेत को पाटा लगाने के बाद समतल करना चाहिए और सिंचाई को आसान बनाने के लिए हल्का ढलान लगाना चाहिए।

मसूर के बीज उपचार की वैज्ञानिक विधि

मसूर की फसल को बीज जनित रोगों से बचाने के लिए बीज उपचार बहुत जरूरी है, इसलिए बीज की बुवाई से पहले बीज उपचार जरूर कर लें। बीज को सबसे पहले फफूंदनाशक से उपचारित करें उसके बाद कीटनाशक से उपचार करना चाहिए एवं अंत में बुवाई से पहले राइजोबियम एवं पी एस बी से उपचारित करना फसल में किट एवं रोगों को नियंत्रित करता है। बीज उपचार के लिए थिरम (2 ग्राम) + कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम) या थिरम @ 3 ग्राम या कार्बेन्डाजिम @ 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम, और कीटनाशक के लिए क्लोरपायरीफॉस 20ई.सी. @ 8 मि.ली.धकिलोग्राम का उपयोग किया जा सकता है। राइजोबियम और पीएसबी का एक–एक पैकेट 10 किलोग्राम बीज के लिए उपयोगी होता है। मसूर के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है। मिट्टी का pH 6–7.5 होना चाहिए। बीज बोने से पहले मिट्टी को खरपतवार से मुक्त करना चाहिए। भारी मिट्टी पर गहरी जुताई करने के बाद दो या तीन बार हैरो से जुताई करनी चाहिए। खेत को पाटा लगाने के बाद समतल करना चाहिए और सिंचाई को आसान बनाने के लिए हल्का ढलान लगाना चाहिए।

मसूर के बीज उपचार की वैज्ञानिक विधि

मसूर की फसल को बीज जनित रोगों से बचाने के लिए बीज उपचार बहुत जरूरी है, इसलिए बीज की बुवाई से पहले बीज उपचार जरूर कर लें। बीज को सबसे पहले फफूंदनाशक से उपचारित करें उसके बाद कीटनाशक से उपचार करना चाहिए एवं अंत में बुवाई से पहले राइजोबियम एवं पी एस बी से उपचारित करना फसल में किट एवं रोगों को नियंत्रित करता है। बीज उपचार के लिए थिरम (2 ग्राम). कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम) या थिरम @3 ग्राम या कार्बेन्डाजिम @2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम, और कीटनाशक के लिए क्लोरपायरीफॉस 20ई.सी. @8 मि.ली.धकिलोग्राम का उपयोग किया जा सकता है। राइजोबियम और पीएसबी का एक–एक पैकेट 10 किलोग्राम बीज के लिए उपयोगी होता है।

मसूर की उन्नत किस्में
फसल की अच्छी किस्में अधिक उपज दे सकती है। इसलिए बुवाई के लिए उन्नत किस्मों का ही चुनाव करना चाहिए। मसूर की उन्नत किस्में निम्नलिखत है – JLPant L-639, Pant L-4, DPL-15 (Priya), Sapna, L-4147, DPL-62 (Sheri), Pant L-406, PL 639, Mallika (K-75), NDL 2, JL 3, IPL 81 (Nuri), LL-147, LH-84-8, और JL-3, JL-1, IPL-81 आदि इसकी उन्नत किस्में है।

बुआई का अनुशंसित समय
मध्य और दक्षिण भारत में अक्टूबर का पहला पखवाड़ा और उत्तर भारत में अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा बुआई के लिए आदर्श समय माना जाता है।

बीज दर और बीज उपचार
प्रति हेक्टेयर 35–40 किलोग्राम बीज की दर उपयुक्त रहती है। बुआई फर्टी–सीड–ड्रिल या देसी हल का उपयोग करके की जा सकती है। बुवाई से पहले बीजों को फफूंदनाशक दवाओं से उपचारित करना चाहिए।

मसूर की फसल में खाद और उर्वरक प्रबंधन
फसल में जुताई के समय खेत में 10 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट का उपयोग करना चाहिए। इसके बाद सामान्यत%, 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, और 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की बेसल ड्रेसिंग की जाती है। कम उपजाऊ मिट्टी में रासायनिक उर्वरकों का संतुलित मात्रा में उपयोग किया जाना चाहिए, जैसे NPK (नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, और पोटैशियम)। समय पर उर्वरको का इस्तेमाल करके फसल से अछि उपज प्राप्त की जा सकती है।

सिंचाई प्रबंधन
मसूर की फसल को अत्यधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती। पहली सिंचाई रोपण के 40–45 दिन बाद और दूसरी फली भरने की अवस्था पर करनी चाहिए। फूल आने और फली बनने के चरण में नमी की कमी महत्वपूर्ण होती है। मध्य भारत में, उपज में सुधार के लिए दो हल्की सिंचाइयाँ की जा सकती हैं। अधिक सिंचाई से फसल की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

खरपतवार नियंत्रण
खरपतवारों से फसल को मुक्त रखने के लिए दो बार हाथ से निराई–गुड़ाई करें, पहली बार 25–30 दिन पर और दूसरी बार 45–50 दिन बाद। खरपतवारनाशी जैसे पेन्डीमेथालिन 30 ईसी @0.75–1 किलोग्राम ए.आई. प्रति हेक्टेयर का उपयोग भी किया जा सकता है। प्रारंभिक 45–60 दिनों की खरपतवार–मुक्त अवधि बहुत महत्वपूर्ण होती है।

फसल की कटाई और कढ़ाई
जब पत्तियाँ गिरने लगती हैं और तना व फलियाँ भूरे रंग की हो जाती हैं, तो फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। कटाई के समय बीज कठोर और खड़ख. ड़ाने वाले होते हैं और उनकी नमी 15% होती है। पकने के बाद फलियाँ गिरने और बीज फटने का खतरा हो सकता है। कटाई में देरी होने पर नमी 10% से कम हो सकती है। कटाई के बाद फसल को खेत में 4–7 दिनों तक सूखने दें और फिर गहाई करें। मैन्युअल या थ्रेशर से बीज को फलियों से अलग किया जा सकता है। साफ बीज को 3–4 दिनों तक धूप में सुखाएँ ताकि उनकी नमी 9–10% तक पहुंच सके। बीज को सुरक्षित तरीके से संग्रहित किया जाना चाहिए।

SONALIKA
LEADING AGRI EVOLUTION

आधुनिक टेक्नोलॉजी बेमिसाल ताक़त

SONALIKA TIGER DI 65 4WD

सबसे बड़ा
CRDS इंजन
4712 cc

ट्रेम स्टेज-IV

इंजन

65 HP पॉवर
55 HP ईंधन माइलेज

फसलों का अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए अक्टूबर माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

किसानों रबी का मौसम शुरू होने वाला है। इस समय किसान अपनी खरीफ की फसलों की कटाई करके रबी की फसलों की बुवाई करेंगे। रबी की फसल का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए फसलों में समय पर कृषि संबंधी कार्य करना बहुत मत्वपूर्ण हैं। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार फसलों की समय पर देखभाल करना बहुत आवश्यक है अगर किसान इसमें थोड़ी भी लापरवाही करते है तो फसलों के उत्पादन में बहुत कमी आ सकती हैं। इसलिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा दी गयी विशेष जानकारी के बारे में हम इस लेख में आपको जानकारी दे रहे हैं जिससे की आप अक्टूबर माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्यों को आसनी से कर सकते हैं।

धान की कटाई एवं मड़ाई के लिए आवश्यक सुझाव

धान की फसल में कटाई से 10–15 दिन पूर्व खेत में पानी लगाना बंद कर देना चाहिए। साथ ही यदि जमीन गहरी हो और उसमें पानी खड़ा हो तो उसका जल निकाल देना चाहिए जिससे की कटाई के समय खेत में पानी ना हो। धान की फसल के पकने के समय 80–90 प्रतिशत दानों का रंग पीलादृसुनहरा हो जाता है। यदि ऐसे दानों को चबाया जाए तो कट–कट की आवाज आती है। इस दशा में दानों के अंदर लगभग 20–22 प्रतिशत नमी होती है। धान की कटाई हाथ से, रीपर अथवा कंबाइन मशीन से की जाती है।

तिलहनी फसलों की बुवाई

इस समय रबी की तिलहनी फसलों की बुवाई भी किसान कर सकते हैं। रबी की प्रमुख तिलहनी फसलें – राई एवं सरसों, अलसी और कुसुम आदि की बुवाई इस महीने में की जाती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए राई और सरसों की बुवाई अक्टूबर के तीसरे सप्ताह तक समाप्त कर लेनी चाहिए। सरसों की फसल में सिंचित दशा में 60–80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40–50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 30–40 कि.ग्रा. पोटाश एवं 20–30 कि.ग्रा. गंधक प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

बारानी अथवा असिंचित दशा में 30–40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 20–25 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 15–20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की सिफारिश की जाती है। असिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन की आधी मात्रा का प्रयोग बुवाई के समय करें। सिंचित दशा में नाइट्रोजन की आधी, फॉस्फोरस, पोटाश एवं गंधक की सम्पूर्ण मात्रा का प्रयोग बुवाई के समय करें। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा बुवाई के 35–40 दिन बाद पहली सिंचाई पर करें। सरसों की बुवाई के लिए उपयुक्त बीज की मात्रा प्रति हेक्टेयर 5–6 कि.ग्रा. होती है। बीज की बुवाई से पहले बीज को उपचारित करना बहुत आवश्यक होता है। बीज जनित रोग से बचाव के लिए बीजों को थायरम अथवा केप्टन 2–2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। सरसों की बुवाई करते समय बुवाई की दुरी का ध्यान रखना भी बहुत आवश्यक होता है, इसकी कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. रखें। कतार में बोने वाली फसलों की बुवाई 45–50 से.मी. की दूरी पर करें। दूरी वाली किस्मों में कतार से कतार की दूरी 45–50 से.मी. और पौधे से पौधे की दूरी 12–15 से.मी. की रखें। अलसी की बुवाई अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से नवंबर के दूसरे पखवाड़े के बीच की जाती है। एक हेक्टेयर से बुवाई के लिए 25–30 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है। अलसी की प्रमुख उन्नतशील किस्में हैं–नेहर, रणधीर, जे.एल. 23, प्रबोधन, 17, जवाहर 23, जवाहर 552, गरिमा, शेखा, स्वेता, सुभम, एस.एल. 2, एस.एल. 27 एवं शीतल आदि।

दलहनी फसलों की बुवाई भी इस महीने में की जाती हैं

चना, मटर और मसूर की बुवाई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े से नवंबर के प्रथम पखवाड़े के मध्य तक समाप्त कर लेनी चाहिए। साथ ही उन्नतशील किस्मों का चयन करें और बीज की राइजोबियम एवं पी.एस.बी. के टीकों से अवश्य उपचारित करें। तीनों फसलों में लगभग 15–20 कि.ग्रा.ध्हे. नाइट्रोजन, 40–50 कि.ग्रा.ध्हे. फॉस्फोरस एवं 20–30 कि.ग्रा./हे. पोटाश की आवश्यकता होती है। संरक्षित उर्वरकों की समुचित मात्रा का प्रयोग बुवाई के समय पर ही करें। छोटे एवं मध्यम आकार के दाने वाली किस्मों के लिए 60–80 कि.ग्रा. तथा बड़े दाने वाली किस्मों के लिए 80–100 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई 30–35 से.मी. की दूरी पर करनी चाहिए। मोटर और मसर के लिए क्रमश: 80–120 एवं 30–40 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। 1 मीटर X30 से.मी. एवं मसर 25 से.मी. की दूरी पर पंक्तियों में बुवाई की जाती है।

समय पर करें चारा फसलों की बुवाई

रबी की मुख्य चारा फसलों में बरसीम, रिजका और जई आदि शामिल हैं। उपरोक्त फसलों की बुवाई का समय मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर है। बुवाई के लिए उच्चतम किस्मों का उपयोग करें तथा सही मात्रा में पोषक तत्व प्रबंधन करें। चारा फसलों की बुवाई समय से करने पर पशुओं के लिए चारा उपलब्ध रहता है, जिससे दूध का उत्पादन भी कम नहीं होता हैं।

सब्जी वर्गीय फसलों के लिए सुझाव

इस महीने में मिर्च एवं टमाटर के खेतों में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दें ताकि रोग को फलने से रोका जा सकें। यदि मिर्च में रोग का प्रकोप अधिक है तो इमिडाक्लोप्रिड / 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। इस महीने में सरसों, साग (पूसा साग–1), मूली (जापानी हाईब्रिड, हिल क्वीन, पूसा मुदुला), पालक (आल ग्रीन, पूसा भारतीय), शलगम (पूसा स्वेती या स्थानीय लाल), बथुआ (पूसा बथुआ–1), मेथी (पूसा कसूरी), गांठ गोभी (हाइब्रिड वियना, पर्पल वियना) तथा धनिया (पंत हरितमा) आदि किस्मों की बुवाई मेड़ों पर करें। जिससे की समय से फसल तैयार हो और आप मुनाफा कमा सकते है।

इस समय गाजर की बुवाई मेड़ों पर करें। गाजर की उच्चतम किस्में हैं – पूसा रूधिरा और पूसा केसर जो की अधिक उत्पादन देती हैं। गाजर की बीज दर 4.0 कि.ग्रा./हे. है। बुवाई से पूर्व बीज को कैप्टान/2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बीज उपचार करने से बीज जनित रोगों की रोकथाम की जा सकती है। खेत में बीजाई के समय गोबर की खाद और फास्फोरस उर्वरक उपयोग करें। गाजर की बुवाई मशीन द्वारा करने से बीज 1.0 किलोग्राम प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है जिससे बीज की बचत तथा उत्पादन की गुणवत्ता भी अच्छी रहती है।

Crops
Coromandel Fantac Plus
Flusilazole 12.5% + Carbendazim 25% SE
Vegetables Crops
Horticultural Crops
More
Amino Acids
Vitamins
FANTAC
Plus
COROMANDEL INTERNATIONAL LIMITED

Cultivation of Broccoli : ब्रोकली की खेती के तरीकों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

ब्रोकली एक हरी पत्तेदार सब्जी है जो गोभी परिवार से संबंधित है। इसका वैज्ञानिक नाम ठतेंपबं वसमतंबमं अंत. पजंसपबं है। इसकी पौष्टिकता और स्वास्थ्य लाभ के कारण ब्रोकली विश्वभर में लोकप्रिय है। यह विटामिन, खनिज, और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होती है, जो कई बीमारियों से बचाने में सहायक होती है।

ब्रोकली की दो प्रमुख किस्में हैं:

स्प्राउटिंग और हेडिंग ब्रोकली, जिनमें से स्प्राउटिंग ब्रोकली अधिक पसंद की जाती है। हेडिंग ब्रोकली हरा, पीला या बैंगनी रंग की हो सकती है और यह फूलगोभी की तरह होती है। हरा रंग अधिक लोकप्रिय है और इसे सलाद, सूप, और सब्जी में इस्तेमाल किया जाता है। इसकी बाजार में मांग निरंतर बढ़ रही है, जिससे इसकी खेती करने वालों को अच्छा मुनाफा हो रहा है। आइए अब इसके खेती के तरीकों पर विस्तार से चर्चा करें।

ब्रोकली की खेती के लिए जलवायु और तापमान

ब्रोकली ठंडे मौसम की फसल है और इसे 15°C से 25°C तापमान पर उगाना सबसे अच्छा होता है। अत्यधिक गर्मी या ठंड पौधों की वृद्धि को प्रभावित कर सकती है। इसे मुख्यतः सर्दियों में उगाया जाता है।

ब्रोकली की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

- ब्रोकली के लिए हल्की दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है, जिसमें पीएच स्तर 6 से 7 के बीच हो।
- मिट्टी को अच्छे से जुतकर और जैविक खाद मिलाकर तैयार करें। मिट्टी की जल निकासी अच्छी होनी चाहिए ताकि पानी जमा न हो सके।

ब्रोकली की उन्नत किस्में

ब्रोकली की उन्नत किस्में निम्नलिखित हैं:

- **अगेती किस्में:** ये 60 से 65 दिनों में तैयार हो जाती हैं। प्रमुख अगेती किस्मों में डी सिक्को, केलेब्रस, ग्रीन बड शामिल हैं, और संकर किस्मों में जिप्सी, अर्काडिया, ग्रीन मैजिक शामिल हैं।
- **मध्यम अवधि की किस्में:** ये 75 से 90 दिनों में तैयार होती हैं। प्रमुख किस्मों में बालथम 29, ग्रीन स्प्राउटिंग मीडिया, डेस्टिनी, मैराथन और एमेराल्ड शामिल हैं।

ब्रोकली की खेती के लिए भूमि की तैयारी

- **बुवाई का समय:** ब्रोकली के लिए सबसे अच्छा समय सर्दी का होता है। उत्तर भारत में इसे अक्टूबर से नवंबर तक बोया जाता है, जबकि दक्षिण भारत में अगस्त–सितंबर में बोया जाता है।
- **बीज दर और बुवाई की विधि:** प्रति हेक्टेयर 300–400 ग्राम बीज की जरूरत होती है। बीज पहले नर्सरी में बोए जाते हैं और 25–30 दिन बाद पौधों को खेत में रोपित किया जाता है।

ब्रोकली की रोपाई नर्सरी की तैयारी

- नर्सरी की क्यारी को 15 सेमी ऊँचा बनाकर उसमें अच्छी सड़ी गोबर या कम्पोस्ट खाद और प्रति वर्गमीटर 50–60 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट मिलाकर तैयार करें।
- कीट और रोगों से बचाव के लिए सुरक्षा उपाय अपनाएं। क्यारी में प्रति वर्गमीटर 5 ग्राम थायरम डालें और 1.5–2 सेमी गहरी कतारें निकालें।
- बीजों को 10 ग्राम ड्राईकोडर्मा, 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम, या 2.5 ग्राम थायरम के साथ उपचारित करें और हल्की फव्वारे से सिंचाई करें। अधिक वर्षा से बचने के लिए क्यारी को घास–फूस या पॉलीथीन शीट से ढकें।

- बेमौसमी खेती के लिए पौधों को पॉलिहाउस या पॉलिटनल में उगाएं। पॉलिहाउस में जड़ों का तापमान कम होने पर हीटर का उपयोग करें ताकि बीजों का अंकुरण तेजी से हो।

नर्सरी की खेत में रोपाई

- 25–30 दिन पुरानी पौध रोपाई के लिए उपयुक्त होती है। रोपाई से पहले खेत में नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फॉस्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा और प्रति नाली 500 ग्राम थीमेट छिड़ककर खेत तैयार करें।
- पौधों के बीच 45–50 सेमी और कतारों के बीच 45–50 सेमी दूरी रखकर रोपाई करें और हल्की सिंचाई करें। यदि कुछ पौधे मर जाएं, तो एक हफ्ते के भीतर नई पौध लगाकर स्थान को भर दें।
- रोपाई के एक महीने बाद बची हुई नाइट्रोजन छिड़कें और पौधों के चारों ओर मिट्टी चढ़ाएं। उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी के परीक्षण के आधार पर करें।
- प्रति हेक्टेयर 15–20 टन गोबर या कम्पोस्ट खाद, 100 किलो नाइट्रोजन, 100 किलो फॉस्फो. रस, और 50 किलो पोटाश का उपयोग करें।

सिंचाई

ब्रोकली की खेती में पर्याप्त नमी बनाए रखना आवश्यक है। रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें और फिर हर 10–12 दिन पर सिंचाई करें। फसल के विकास की अवधि में मिट्टी में नमी बनी रहनी चाहिए।

कटाई और उत्पादन

- ब्रोकली की कटाई आमतौर पर रोपाई के 70–90 दिन बाद की जाती है।
- जब ब्रोकली का हेड पूरी तरह विकसित हो जाए और फूल खिलने से पहले, उसे काटा जाता है। प्रति हेक्टेयर औसतन 120–150 क्विंटल उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
- ब्रोकली की सही खेती से न केवल बेहतर उत्पादन मिल सकता है, बल्कि यह किसानों के लिए एक लाभकारी व्यवसाय भी बन सकता है।
- इसके स्वास्थ्य लाभ और बाजार में बढ़ती मांग इसे एक आकर्षक कृषि विकल्प बनाती है।

जरबेरा फूल की खेती: सही तकनीक और देखभाल से पाएं उच्च गुणवत्ता वाले फूल

जरबेरा (Gerbera) एक सुंदर और आकर्षक फूल है, जिसे "अफ्रीकन डेजी" भी कहा जाता है। इसकी खेती न केवल सजावटी उद्देश्य से बल्कि आर्थिक लाभ के लिए भी की जाती है। सही देखभाल और तकनीक से उच्च गुणवत्ता वाले फूल प्राप्त किए जा सकते हैं। इस लेख में जरबेरा की खेती के बारे में पूरी जानकारी दी गई है।

जलवायु और स्थान

जरबेरा की खेती के लिए 18-24°C के तापमान वाली समशीतोष्ण जलवायु सबसे उपयुक्त है। उच्च तापमान और अत्यधिक ठंड दोनों ही इस पौधे के लिए हानिकारक होते हैं। इसे प्रत्यक्ष सूर्यप्रकाश की आवश्यकता होती है, लेकिन हल्की छाया का भी प्रबंध किया जा सकता है।

मिट्टी और उसकी तैयारी

जरबेरा के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी का पीएच 5.5 से 6.5 के बीच होना चाहिए। खेती से पहले भूमि को जोतकर जैविक खाद मिलाई जाती है और अच्छी नमी बनाए रखने के लिए जल निकासी का उचित प्रबंध किया जाता है।

पौधों का चयन और रोपण

जरबेरा की खेती के लिए उच्च गुणवत्ता वाली किस्में चुनी जाती हैं। पौधों को 30x30 सेंटीमीटर की दूरी पर रोपा जाता है और रोपण के समय ध्यान रखा जाता है कि जड़ें मिट्टी में अच्छी तरह फैलें।

सिंचाई प्रबंधन

जरबेरा को नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है। ड्रिप इरिगेशन प्रणाली का उपयोग किया जा सकता है, जो जल की बचत करता है और पौधों को आवश्यक नमी प्रदान करता है। जलजमाव से बचने के लिए ध्यान दिया जाना चाहिए।

खाद और पोषण प्रबंधन

जरबेरा की खेती में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश की सही मात्रा आवश्यक है। जैविक और रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग पौधों के विकास और फूलों की गुणवत्ता को बढ़ाता है। माइक्रोन्यूट्रिएंट्स का भी समय–समय पर उपयोग करना चाहिए।

रोग और कीट नियंत्रण

जरबेरा के पौधों पर पाउडरी मिल्ड्यू, फ्यूसैरियम विल्ट, और लीफ स्पॉट जैसे रोगों का प्रकोप हो सकता है। कीटों में एफिड्स, थ्रिप्स और माइट्स का नियंत्रण कीटनाशकों और जैविक उपायों से किया जा सकता है।

कटाई और उपज

जरबेरा के फूल जब पूरी तरह से खिल जाएं, तो उन्हें सुबह के समय 2–3 इंच डंडी के साथ काटा जाता है। एक एकड़ क्षेत्र से 1–1.5 लाख फूल प्रति वर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे किसानों को अच्छा लाभ होता है। जरबेरा की खेती सही देखभाल और तकनीकों के साथ एक लाभकारी व्यवसाय बन सकती है। जलवायु, मिट्टी, सिंचाई, पोषण और रोग नियंत्रण के उचित प्रबंधन से उच्च गुणवत्ता के फूल प्राप्त किए जा सकते हैं।

इन तीन पेड़ों की खेती करके आप भी कमा सकते है लाखों का मुनाफा

कृषि वानिकी (एग्रोफॉरेस्ट्री) किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो रही है। पारंपरिक खेती छोड़कर कई किसान पेड़ों की खेती में निवेश कर रहे हैं, जिससे वे अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। देशभर में ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां किसान पेड़ लगाकर करोड़ों रुपए कमा रहे हैं। सफेदा, महोगनी, सागवान, गम्हार, चंदन आदि पेड़ों की खेती कम लागत और देखभाल के साथ की जा सकती है, और इससे अच्छी कमाई होती है।

पेड़ों की खेती के लाभ

पारंपरिक खेती से अनाज और अन्य सामग्री प्राप्त की जा सकती है, लेकिन कृषि वानिकी से महंगी लकड़ी मिलती है, जिसका फर्नीचर और अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग होता है। भारत में उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी की बहुत मांग है, इसलिए लकड़ियों का विदेशों से आयात भी किया जाता है। इंग्लैंड और अमेरिका जैसे देशों में लकड़ी की खेती सामान्य है, इसलिए वहां से लकड़ी आयात की जाती है।

1. सफेदा की खेती

सफेदा, जिसे यूकेलिप्टस भी कहा जाता है, फर्नीचर, ईंधन, और कागज की लुगदी बनाने में उपयोग होता है। सफेदा की खेती से किसान अच्छी कमाई कर सकते हैं। एक हेक्टेयर में 300 सफेदा के पौधे लगाए जा सकते हैं और 5 साल में तैयार हो जाते हैं। सही तरीके से खेती करने पर किसान 5 साल में एक हेक्टेयर से 70 से 80 लाख रुपए तक कमा सकते हैं।

2. महोगनी की खेती

महोगनी की लकड़ी फर्नीचर और सजावटी सामान बनाने के लिए बेहतरीन मानी जाती है। इसके बीजों और पत्तियों से तेल और मच्छर भगाने वाली दवा भी बनाई जाती है।

महोगनी के बीज का मूल्य प्रति किलो 1000 रुपये तक होता है। एक हेक्टेयर में 1100 महोगनी पेड़ लगाए जा सकते हैं, जो 12 साल में तैयार होते हैं। प्रत्येक पेड़ से 20 से 25 हजार रुपए की कमाई हो सकती है, और किसान 12 से 15 साल में करोड़पति बन सकते हैं।

3. सागवान की खेती

सागवान के पेड़ 15 से 20 साल में तैयार होते हैं और इनका उपयोग फर्नीचर, नाव, जहाज, खिड़कियां, और रेल डिब्बों के निर्माण में होता है। इसके पत्ते औषधीय उपयोग में भी आते हैं। एक एकड़ में 500 सागवान के पेड़ लगाए जा सकते हैं। 15–20 साल बाद एक सागवान का पेड़ 25 से 30 हजार रुपए में बेचा जा सकता है, जिससे किसान करोड़पति बन सकते हैं।

इन 5 शक्तिशाली ट्रैक्टरों को खरीद कर चला सकते हैं हर प्रकार के उपकरण

आज का किसान जमाने के साथ चल रहा हैं। किसान भी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करके खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहा हैं। खेती करने के लिए आज के युग में एक शक्तिशाली और बेहतरीन ट्रैक्टर होना बहुत आवश्यक हैं। ट्रैक्टर से ही खेती के सभी कार्य आसनी से किये जा सकते है। आज कल किसान ऐसे ट्रैक्टर की तलाश में रहते है जिसमें उनको सभी आधुनिक फीचर्स और पावर मिल सकें। आज के इस लेख में हम ऐसे 5 शक्तिशाली ट्रैक्टरों की जानकरी देंगे जिससे की आप सभी खेती के कार्य आसानी से कर सकते हैं।

टॉप 5 शक्तिशाली और शानदार ट्रैक्टरों के फीचर्स

1. न्यू हॉलैंड 5630 TX PLUS TREM-IV

- इस श्रेणी में ये न्यू हॉलैंड 5630 ट्रैक्टर सबसे शक्तिशाली हैं इस ट्रैक्टर की पावर की बात करे तो इस ट्रैक्टर में 75 एचपी का इंजन दिया गया हैं।
- ट्रैक्टर के इंजन में 3 सिलिंडर दिए गए हैं साथ ही इस ट्रैक्टर का इंजन 2300 के रेटेड आरपीएम पर कार्य करता हैं।
- ये ट्रैक्टर हर प्रकार के कार्य करने के लिए बनाया गया हैं। ट्रैक्टर न्यू हॉलैंड 5630 में ट्रांसमिशन टाइप फुल सिंक्रोमेश दिया गया हैं जिसमें 12 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स गियर्स दिए गए हैं।
- मैकेनिकल रियल आयल इम्मरसेड ब्रेक इस ट्रैक्टर में आपको मिल जाते हैं, जिससे की ट्रैक्टर को आसनी से नियंत्रित किया जा सकता हैं।
- स्टीयरिंग टाइप इस ट्रैक्टर में हाइड्रोस्टैटिक दिया गया हैं।
- ट्रैक्टर में 70 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया हैं।
- ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 2500 किलोग्राम दिया गया हैं।
- न्यू हॉलैंड 5630 में फ्रंट टायर 12.4 x 24 के दिए गए हैं और रियर टायर 18.4 x 30 के दिए गए है।
- न्यू हॉलैंड 5630 ट्रैक्टर की कीमत 14.55–15.29 लाख रूपए तक है।

2. महिंद्रा अर्जुन नोवो 605 Di-i 2WD

- ये ट्रैक्टर भी शानदार डिजाइन और बेजोड़ शक्ति के साथ में आता है। इस ट्रैक्टर के इंजन की शक्ति 57 HP दी गयी है जो की 2100 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है।
- महिंद्रा अर्जुन 605 डीआई–आई ट्रैक्टर का एयर क्लीनर नोवो कैटेगिरी में सबसे बड़ा है, जो पूरे राइड के दौरान डस्टर–मुक्त एयर फिल्टर प्रदान करने के लिए जाना जाता है।
- ट्रैक्टर का 306 सेमी क्लच कम टूट–फूट के साथ सहज संचालन प्रदान करता है।
- गाइड प्लेट के साथ इसका सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन सुनिश्चित करता है कि गियर चेंज करना आसान है।
- इसकी हाई–मीडियम–लो ट्रांसमिशन सिस्टम के साथ, 15 फॉरवर्ड़ 3 रिवर्स गियर, 7 अतिरिक्त अद्वितीय गति प्रदान करते हैं।
- 2200 किलोग्राम की वजन उठाने की क्षमता के साथ में ये ट्रैक्टर आता है।
- ट्रैक्टर में 7.50 x 16 के फ्रंट टायर और रियर टायर 16.9 x 28 के दिए गए है।
- इस ट्रैक्टर की कीमत 9.70 – 9.90 लाख रूपए तक है कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिल जाता है।

4. फार्मट्रैक 60 पावरमैक्स

- फार्मट्रैक 60 पावरमैक्स नए मॉडल में 55 एचपी का इंजन दिया गया हैं।
- फार्मट्रैक 60 पावरमैक्स इंजन की क्षमता 3514 सीसी है और इसमें 3 सिलेंडर हैं जो 2000 इंजन वाले आरपीएम रेटेड हैं और यह संयोजन खरीदारों के लिए बहुत अच्छा है।
- इस ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 49 एचपी की दी गयी हैं। पावरमैक्स फार्मट्रैक 60 पावरमैक्स ट्रैक्टर में कांस्टेंट मेश (T20) का ट्रांसमिशन दिया गया हैं।
- फार्मट्रैक 60 पावरमैक्स में आपको 16 फॉरवर्ड. 4 रिवर्स गियर्स मिल जाते हैं। आयल इम्मरसेड ब्रेक ट्रैक्टर को अच्छा नियंत्रण प्रदान करते हैं।
- इस ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग हैं, जिससे की ट्रैक्टर को आसानी से चलाया जा सकता हैं।
- ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 2500 किलोग्राम की दी गयी है।
- इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 7.5 x 16 के दिए गए है और रियर टायर 14.9 x 28 के दिए गए है।
- इस ट्रैक्टर की कीमत लाख 8.00–9.50 रूपए तक है। कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिल जाता है।

5. जॉन डियर 5060E

- ये ट्रैक्टर बेजोड़ शक्ति और सुंदर डिजाइन के साथ आता है। 60 HP का इंजन इस ट्रैक्टर में है, जो 2400 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है।
- इस कैटेगिरी में जॉन डियर 5060 E ट्रैक्टर का एयर क्लीनर सबसे बड़ा है, जो पूरे राइड के दौरान डस्टर–मुक्त एयर फिल्टर प्रदान करता है।
- इस ट्रैक्टर में गियरबॉक्स 9 फॉरवर्ड + 3 रिवर्स / 12 फॉरवर्ड + 12 रिवर्स के ऑप्शन में दिया गया है।
- इस ट्रैक्टर में तेल में डूबे हुए डिस्क ब्रेक्स दिए गए है जिससे की ट्रैक्टर को आसनी से नियंत्रित किया जा सकता है।
- भारत में जॉन डियर 5060 E 2WD की कीमत 10.85–11.50 लाख (एक्स–शोरूम कीमत)रुपए है। भारत में जॉन डियर 5060 E की कीमत बहुत सस्ती है।

मैसी फर्ग्यूसन 30 DI ऑर्चर्ड प्लस: बागवानी के लिए शक्तिशाली 30 HP ट्रैक्टर, कीमत और फीचर्स

मैसी फर्ग्यूसन के ट्रैक्टर भारत में काफी लोकप्रिय हैं। यह कंपनी किसानों की विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए ट्रैक्टरों की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करती है। कंपनी का उद्देश्य किसानों की खेती को सरल और प्रभावी बनाना है। इस दिशा में, मैसी फर्ग्यूसन ने विशेष रूप से बागवानी के कार्यों को आसान बनाने के लिए मैसी फर्ग्यूसन 30 DI ऑर्चर्ड प्लस ट्रैक्टर को लॉन्च किया है। इस लेख में हम इस ट्रैक्टर के विशेषताओं, तकनीकी विवरण और कीमत पर चर्चा करेंगे।

मैसी फर्ग्यूसन 30 DI ऑर्चर्ड प्लस ट्रैक्टर इंजन और पावर स्पेसिफिकेशन्स

- **इंजन पावर:** इस ट्रैक्टर में 17-9 kW (30 hp) की पावर वाला इंजन लगाया गया है।
- **सिलिंडर:** इसमें 2 सिलिंडर होते हैं।
- **क्यूबिक कैपेसिटी:** इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 1670 CC है।
- **फ्यूल इंजेक्शन:** फ्यूल इंजेक्शन पंप प्दसपदम प्रकार का है।

मैसी फर्ग्यूसन 30 DI ऑर्चर्ड प्लस ट्रैक्टर स्पेसिफिकेशन और फीचर्स

- **क्लच:** इस ट्रैक्टर में ड्यूल क्लच टाइप होता है, जो गियर्स को बदलने में आसानी प्रदान करता है।
- **गियरस:** इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स स्पीड के गियर्स उपलब्ध हैं।
- **टायरस:** ट्रैक्टर में 13.97 cm x 40.64 cm (5.5 x 16) के फ्रंट और 31.49 cm x 61 cm (12.4 x 24) के रियर टायर्स होते हैं, जो हर स्थिति में कार्यक्षम हैं।
- **Forward स्पीड:** ट्रैक्टर की Forward स्पीड 26.88 km/h है।
- **पीटीओ टाइप:** ट्रैक्टर में लाइव पीटीओ उपलब्ध है।
- **पीटीओ पावर:** पीटीओ की पावर 26 hp है, जिससे विभिन्न कार्य किए जा सकते हैं।
- **पीटीओ स्पीड:** पीटीओ की स्पीड 540 RPM है।
- **हायड्रोलिक्स लिफ्टिंग कैपेसिटी:** ट्रैक्टर की हायड्रोलिक्स लिफ्टिंग कैपेसिटी1350 किलोग्राम है (लोअर लिंक पर क्षैतिज स्थिति में)।
- **ब्रेक टाइप:** ट्रैक्टर में मल्टी डिस्क तेल में डूबे ब्रेक्स दिए गए हैं।
- **स्टीयरिंग:** ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग उपलब्ध है।
- **आयाम:** ट्रैक्टर की कुल लंबाई 2672 mm, चौड़ाई 1420 mm और कुल ऊंचाई 1600 mm है।
- **वजन:** ट्रैक्टर का कुल वजन 1520 किलोग्राम है।
- **फ्यूल टैंक कैपेसिटी:** फ्यूल टैंक की कैपेसिटी 25 लीटर है।

मैसी फर्ग्यूसन 30 DI ऑर्चर्ड प्लस ट्रैक्टर की कीमत

मैसी फर्ग्यूसन 30 DI ऑर्चर्ड प्लस ट्रैक्टर की कीमत 5.40–5.72 लाख रुपये के बीच है। कीमत क्षेत्र के आधार पर थोड़ा बदल सकती है। इस ट्रैक्टर को विशेष रूप से बागवानी कार्यों के लिए डिजाइन किया गया है ताकि किसान बागवानी के सभी कार्य आसानी से और समय पर कर सकें।

सोलिस 7524 S ट्रैक्टर: 75 HP की ताकत, फीचर्स और कीमत जानें

सोलिस एक जापानी ट्रैक्टर कंपनी है जो ट्रैक्टरों का निर्माण करती है। यह कंपनी 20–120 एचपी के ट्रैक्टर और 70 से अधिक उपकरणों का उत्पादन करती है। ITL का प्रमुख ब्रांड सोलिस दुनिया के अग्रणी ट्रैक्टर ब्रांडों में से एक है, जो मजबूती, स्थायित्व और शक्ति का पर्याय है। सोलिस ने 100 साल पुराने यानमार के साथ साझेदारी की है, जो जापानी डीजल इंजन विशेषज्ञ हैं, ताकि अत्याधुनिक जापानी तकनीक पेश की जा सके और ‘भविष्य अभी है’ को साकार किया जा सके। सोलिस के तहत, भारतीय किसानों के लिए यानमार ट्रैक्टर रेंज पेश की गई है। इस लेख में आप इस कंपनी के एक शक्तिशाली ट्रैक्टर के बारे में जानेंगे।

सोलिस का विस्तार

सोलिस यानमार एक नए युग की शुरुआत करने के लिए प्रतिबद्ध है, कंपनी किसानों के लिए प्रौद्योगिकी लेकर आ रही है ताकि विश्वभर में कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा दिया जा सके। सोलिस एड्रेसेबल सेगमेंट में 15 से अधिक देशों में मार्केट लीडर है, जिसमें विकसित और विकासशील दोनों देश शामिल हैं जैसे जर्मनी, फिनलैंड, पुर्तगाल, आइसलैंड, चेक गणराज्य, म्यांमार, नेपाल और बांग्लादेश।

सोलिस खेत की जरूरतों के अनुसार अनुकूलित ट्रैक्टर पेश कर रहा है, और सभी यूरोपीय देशों में इसके ट्रैक्टरों की उपस्थिति सफलतापूर्वक स्थापित है।

सॉलिस 7524 S ट्रैक्टर

सॉलिस 7524 S – सोलिस कंपनी का एक शक्तिशाली ट्रैक्टर है, जो 75 HP के दमदार इंजन के साथ आता है। इस शक्तिशाली इंजन में 4 सिलिंडर दिए गए हैं। ट्रैक्टर के इंजन की क्यूबिक क्षमता 4712 CC है। इस ट्रैक्टर में कंपनी ने ड्राई टाइप का एयर फिल्टर प्रदान किया है। इस ट्रैक्टर में आपको स्वतंत्र पीटीओ मिलता है, जो 540 आरपीएम पर बेहतरीन प्रदर्शन करता है। यह ट्रैक्टर 63 hp की पीटीओ पावर के साथ आता है, जिससे आप पीटीओ से चलने वाले उपकरणों को आसानी से चला सकते हैं। ट्रैक्टर की पीटीओ पावर अधिक होने से रोटावेटर, थ्रेसर और अन्य पीटीओ संचा. लित उपकरणों को आसानी से चलाया जा सकता है।

सॉलिस 7524 S ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- इस ट्रैक्टर के ट्रांसमिशन की बात करें तो इसमें आपको कॉन्सटेंट मेष टाइप का ट्रांसमिशन मिलता है, और इसके गियरबॉक्स में 12 फॉरवर्ड. 12 रिवर्स गियर्स होते हैं।
- ड्यूल क्लच होने से ट्रैक्टर में गियर्स की पोजीशन को आसानी से बदला जा सकता है। अधिक गियर्स के विकल्प से ट्रैक्टर में बेहतर गति प्राप्त होती है।
- सॉलिस 7524 S ट्रैक्टर में मल्टी डिस्क आउटबोर्ड ओआईबी ब्रेक मिलते हैं, जिससे ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।
- ट्रैक्टर को मोड़ने के लिए इसमें ड्यूल एक्टिंग पावर स्टीयरिंग मिलता है, जिससे किसान इसे कम जगह में भी आसानी से मोड़ सकते हैं।
- इस ट्रैक्टर में 60 लीटर का बड़ा ईंधन टैंक मिलता है, जिससे आप लंबे समय तक बिना रुके काम कर सकते हैं।
- सॉलिस 7524 S की हाइड्रॉलिक्स लिफ्टिंग क्षमता 2500 किलोग्राम है, जिससे आप इस ट्रैक्टर का उपयोग ढुलाई के कार्यों में भी आसानी से कर सकते हैं।
- इस ट्रैक्टर के आगे के टायर 11.2*24 और पीछे के टायर 16.9*30 के होते हैं।

आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर: 36 HP की ताकत और उत्कृष्ट प्रदर्शन

आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर एक शक्तिशाली और विश्वसनीय कृषि मशीन है, जो 33 एचपी की शक्ति प्रदान करता है। इसमें 3–सिलेंडर इंजन, बेहतर ईंधन दक्षता और उत्कृष्ट प्रदर्शन होता है। यह विभिन्न कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त है और इसमें आरामदायक कैबिन और आधुनिक तकनीकें शामिल हैं। हमारे इस लेख में हम आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर की सभी विशेषताएं, गुणवत्ता और उचित मूल्य के बारे में बताने वाले है।

आयशर 333 सुपर प्लस इंजन पावर

- आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर में एक शक्तिशाली 36 HP का इंजन उपलब्ध है, जो उच्च प्रदर्शन और दक्षता सुनिश्चित करता है।
- इस ट्रैक्टर में SIMPSON WATER कूल्ड टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है, जो इंजन को अत्यधिक गर्मी से बचाता है और लंबे समय तक काम करने की क्षमता प्रदान करता है।
- इसमें 3 सिलेंडर हैं, जो स्थिरता और संतुलन में मदद करते हैं।
- इंजन की कुल क्षमता 2365 CC है, जो इसे भारी कृषि कार्यों के लिए सक्षम बनाती है।

- ईंधन इंजेक्शन के लिए इंजन में Inline पंप दिया गया है, जो ईंधन की दक्षता को बढ़ाता है और प्रदर्शन में सुधार करता है।
- इस ट्रैक्टर की डिजाइन और तकनीक किसानों के लिए काम करने को आसान और प्रभावी बनाती है, जिससे यह विभिन्न कृषि कार्यों के लिए आदर्श विकल्प है।
- आयशर 333 सुपर प्लस अपनी शक्ति और विश्वसनीयता के लिए जाना जाता है, जो किसानों की मेहनत को सफल बनाता है।

आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर Specification and फीचर्स

क्लच और ट्रांसमिशन

आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर में क्लच के लिए Single और क्नंस क्लच के विकल्प उपलब्ध हैं। इसका Partial Constant डमी ट्रांसमिशन इसे सुगम गियर परिवर्तन की सुविधा प्रदान करता है।

गियरबॉक्स

इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जिससे विभिन्न कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त गति प्राप्त होती है।

टायर्स

ट्रैक्टर में अगले टायर का आकार 6.0 x 16 और पिछले टायर का आकार 13.6 x 28 है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड / रेटेड RPM लगभग 30.84 किमी / घंटा है, जो इसे तेज गति से कार्य करने की क्षमता प्रदान करती है।

PTO और लिफ्टिंग क्षमता

- आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर में स्पअम PTO दिया गया है, जिसमें Siu-splined शाफ्ट है।
- PTO की स्पीड 540 RPM है, जो 1944 चक्रों पर मिलती है।
- PTO में Multi Speed और Reverse Speed के विकल्प भी उपलब्ध हैं।
- इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता (Lower links at horizontal position) 1650 किलोग्राम है, और इसमें Three&Point Linkage प्रणाली है।
- Draft, Position और Response Control के लिए अलग से लीवर दिया गया है।

ब्रेक और स्टीयरिंग

- ब्रेक सिस्टम में Multi-disc तेल में डूबे हुए ब्रेक्स होते हैं, जो सुरक्षित और प्रभावी रोकथाम सुनिश्चित करते हैं।
- स्टीयरिंग के लिए Mechanical Steering विकल्प है, साथ ही Power Steering का भी विकल्प उपलब्ध है।
- इस ट्रैक्टर में 12V 75Ah की बैटरी दी गई है।
- आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर, अपनी उत्कृष्ट तकनीकी विशेषताओं के साथ, कृषि कार्यों के लिए एक विश्वसनीय और प्रभावी विकल्प है।
- यह शक्ति, स्थिरता और दक्षता को मिलाकर किसानों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

आयशर 333 सुपर प्लस ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो ये ट्रैक्टर 5.60–5.80 लाख रूपए तक उपलब्द है। किसानों भाइयों ये ट्रैक्टर आपके लिए बहुत ही अच्छा विकल्प हो सकता है इस ट्रैक्टर की मदद से आप अपने खेती के कार्यो को आसान बना सकते है।

पडलिंग का मास्टर ब्लास्टर
श्रेष्ठ पडलिंग मास्टर
इसके विशेष डिज़ाइन से मिले गीली मिट्टी में भी बेहतरीन ग्रिप
JK TYRE
TOTAL CONTROL
STANDARD
7
YEARS
WARRANTY
मज़बूत टाई-बार
बेहतर लग स्पेसिंग
और ज़्यादा गहरा ट्रेड
नई तकनीक से बना
Mud Shaker
SHRESTH
JK TYRE
उपलब्ध साइज़:
13.6 - 28 | 14.9 - 28
#9.50 - 20 | 16.9 - 28
#Coming soon.
*T&C apply.

भंडारित अनाज को सुरक्षित रखने के उपाय

देश के कुल उत्पादन का लगभग 7% अनाज भंडारण के दौरान खराब हो जाता है। लगभग 70% उत्पादन स्थानीय स्तर पर किसानों द्वारा पारंपरिक तरीकों से संग्रहीत किया जाता है। इन तरीकों में कच्चे कमरों में अनाज भंडारण, बीज व खाद्यान्नों को राख मिलाकर रखना, प्लास्टिक या जूट की बोरियों में संग्रहण, और नीम की पत्तियों या राख के साथ मिट्टी में सुरक्षित रखना शामिल है। खाद्यान्न को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों की लगभग एक दर्जन प्रजातियाँ हैं। अलग–अलग प्रकार के खाद्यान्नों पर हमला करने वाले कीट भिन्न होते हैं, लेकिन प्रबंधन के उपाय समान रहते हैं। यहां हम आपको भंडारित अनाज को सुरक्षित रखने के कुछ सुझावों के बारे में जानकारी देंगे जिससे की भण्डारण के दौरान आनाज खराब ना हो।

भंडारित अनाज में उचित नमी व तापमान द्वारा कीट प्रबंधन

अधिक नमी के कारण कीट पनपते हैं, जिससे बीज और खाद्यान्न की गुणवत्ता और जीवन शक्ति प्रभावित होती है। अत्यधिक नमी फफूंद रोगों को बढ़ावा देती है, जो अंकुरण को कमजोर करती हैं। तापमान बढ़ने पर कीट अधिक सक्रिय हो जाते हैं, जिससे बीजों की जीवंतता घट सकती है। बीज और अनाज के लिए नमी का स्तर 13% और तिलहन के लिए 8–9% रखना चाहिए।

भंडारण कक्ष एवं पात्र को कीट मुक्त करने के उपाय

खाद्यान्न को कीटों से सुरक्षित रखने के लिए भंडारण से पहले कक्ष और पात्रों को कीट मुक्त करना आवश्यक है। फसल की कटाई के बाद इन्हें साफ रखना चाहिए ताकि कीटों का प्रकोप न हो। भंडारण कक्ष और पात्र को नियमित रूप से कीट मुक्त करने के उपाय निम्नलि. खित हैं:

फसल के भंडारण से पहले किए जाने वाले उपाय

भंडारण से पहले कमरे, गोदाम या अनाज पात्र को पूरी तरह से साफ करें और दीवारों व फर्श को मिट्टी या सीमेंट से लीपें। यदि भंडारण कमरे या गोदाम में करना है तो इसे सूखाकर कीटनाशक (जैसे 10 मिलीलीटर क्लोरीन या 5% D.D.T) का छिड़काव करें। नई जूट की बोरियों को 50% ई.आर.एस या 5% मालाथियान से उपचारित करें और धोने के बाद 0.5% ग्राम एचसीएच से उपचार करें। पात्र को 4–5 घंटे खुला रखें, ठंडा करें, और फिर साफ करके इसके बाद ही इसमें बीज अनाज संग्रहीत करें। बाहरी प्रदूषण से बचाने के लिए भण्डारण स्थान को हर तरफ से बंद करें। आग आपके यहां मिट्टी की दीवारें है, तो दीवारों पर मैलाथियान 50 ईसी या डी.डी.टी. का छिड़काव करें। अनाज और बीज को भण्डारित करते समय नमी का स्तर 10: से कम रखें ताकि कीट और रोग कम हों।

फसल के भंडारा के बाद कि, जाने वाले उपाय

फसल कटाई के बाद ही फसल में कीटों का प्रकोप होना शुरु हो जाता है, इसलिए भण्डारण के बाद भंडा. रित फसलों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। अगर भण्डारण के बाद आपको थोड़ा भी कीटों का प्रकोप दिखाई देता है, तो शुष्क परिस्थिति में एल्यूमीनियम फॉस्फाइड का प्रयोग करें। बीज और अनाज को सूखा रखने के लिए उचित मात्रा में मैलाथियान का छिड़काव करना चाहिए। 15 दिन के भीतर निरीक्षण करना आवश्यक है ताकि कीट के प्रकोप का प्रारंभिक आकलन किया जा सकें। पूरी सतर्कता बरतनी चाहिए कि कोई बाहरी नमी या कीट भंडारित अनाज और बीजों में प्रवेश न कर सकें।

किसानों को धान की बिक्री पर मिलेगा 100 रुपये का बोनस

देश में किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य मिल सके, इसके लिए सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर फसलों की खरीद करती है। इसके साथ ही कुछ राज्य सरकारें भी फसलों की खरीद पर बोनस देती हैं। इसी सिल. सिले में झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार ने किसानों को धान की MSP खरीद पर 100 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देने का निर्णय लिया है। इससे राज्य में धान उगाने वाले किसानों को लाभ होगा। खरीफ विपणन मौसम 2024–25 के दौरान राज्य सरकार किसानों से धान की खरीद केंद्र द्वारा तय किए गए डैच के अलावा 100 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देकर करेगी। इसके लिए सरकार ने 60 करोड़ रुपये का बजट तय किया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई कैबिनेट बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी मिली है।

किसानों को धान की क्या कीमत मिलेगी?

इस बार केंद्र सरकार ने साधारण धान का MSP 2300 रुपये प्रति क्विंटल और ग्रेड ए धान का MSP 2320 रुपये प्रति क्विंटल तय किया है। इसके साथ ही झारखंड सरकार 100 रुपये का अतिरिक्त बोनस देगी। यानी साधारण धान के लिए किसानों को 2400 रुपये प्रति क्विंटल और ग्रेड ए धान के लिए 2420 रुपये प्रति क्विंटल का भाव मिलेगा। राज्य सरकार ने इस साल 6 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद का लक्ष्य रखा है।

पिछले साल किसानों को 117 रुपये का बोनस मिला था

खरीफ वर्ष 2023–24 में झारखंड सरकार ने किसानों को 117 रुपये प्रति क्विंटल का बोनस दिया था, और तब 2300 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान की खरीद की गई थी। पिछले साल सरकार ने राइस मिलर्स को प्रति क्विंटल 60 रुपये का इंसेंटिव भी दिया था। उस समय भी धान की खरीद का लक्ष्य 6 लाख मीट्रिक टन था।

BHARAT CERTIS®
AGRISCIENCE LTD
A Group Company of Mitsui & Co., Ltd., Japan
हिमाराया
मिटाए खरपतवारों का साया
कपास के चौड़ी पत्ती खरपतवारों का उत्तम समाधान
BHARAT CERTIS®
HIMARAYA®
PYRITHIOBAC SODIUM 10% EC
HERBICIDE

किसानों के लिए बहुत ज्ञानवर्धक रहा दो दिवसीय PAU किसान मेला, मेले में किसानों ने खेती को लेकर काफी कुछ सीखा

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (PAU) ने हाल ही में दो दिवसीय किसान मेला आयोजित किया। इस आयोजन के दौरान, किसानों को खेती के विभिन्न पहलुओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। PAU का यह मेला किसानों के लिए बेहद ज्ञानवर्धक साबित हुआ, जिसने उनकी फसलों की उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार की संभावनाएँ बढ़ाई। मेले में कृषि विज्ञान, नवीनतम तकनी. कों, उन्नत बीजों, पोषक तत्वों, कीटनाशकों, फसल प्रबंधन, पशुपालन, ट्रैक्टरों और कृषि मशीनरी पर विशेष ध्यान दिया गया। विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए व्याख्यान और प्रदर्शनों ने किसानों को नई विधियों और उपायों से अवगत कराया। इससे न केवल उनकी मौजूदा समस्याओं का समाधान मिला, बल्कि भविष्य के लिए भी उन्हें नई दिशा मिली। इस प्रकार के मेले किसानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि ये उन्हें उन्नत कृषि ज्ञान और तकनीकों से सीधे जोड़ते हैं, जिससे वे अपनी खेती को अधिक लाभकारी और कुशल बना सकते हैं।

विकसित बीजों की किस्में भी मिलीं किसानों को

PAU के किसान मेले में किसानों को विभिन्न किस्मों के बीज प्रदान किए गए। कृषि वैज्ञानिकों ने रबी की फसलों के बीज उपलब्ध कराए, जिनमें गेहूं, जौ, चना और काबुली चना की कई किस्में शामिल थीं। गेहूं की किस्में जैसे PBW 826, PBW 824, PBW 725, PBW 766 (Sunehri), PBW 1 ZN, PBW 2 ZN, PBW 869, PBW 1 Chapatti, और अन्य शामिल थीं। जौ की किस्में PL 807 और PL 426 थीं, जबकि चना की किस्में PBG 8, PBG 10 और काबुली चना L-552 उपलब्ध था।

ट्रैक्टरों और कृषि मशीनरी की प्रमुख कंपनियाँ मेले में शामिल हुईं

PAU किसान मेले में कई प्रमुख कंपनियाँ ट्रैक्टरों और कृषि मशीनरी का प्रदर्शन करने आईं, जो किसानों के लिए एक प्रमुख आकर्षण था। इन कंपनियों ने अपने नवीनतम उपकरण और मशीनरी प्रदर्शित किए, जो खेती को अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में सहायक हो सकते हैं। इन प्रदर्शनों के माध्यम से किसानों को विभिन्न प्रकार की मशीनरी जैसे ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, सीड ड्रिल्स आदि के बारे में जानकारी मिली। कंपनियों के प्रतिनिधियों ने अपने उत्पादों की विशेषताएँ, लाभ और उपयोग की विधियाँ समझाईं, जिससे किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद मिली। किसानों को विभिन्न विकल्पों की तुलना करने का अवसर मिला और वे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सबसे उपयुक्त उपकरण चुन सके। इसके अलावा, कंपनियों के साथ सीधी बातचीत से उन्हें व्यक्तिगत सलाह भी प्राप्त हुई।

मेले में भाग लेने वाली कंपनियाँ

मेले में प्रमुख कृषि और ट्रैक्टर कंपनियों ने भाग लिया। महिंद्रा, स्वराज, मैसी फेर्गुसन (TAFE), एस्कॉर्ट्स कुबोटा, सोनालिका जैसे ट्रैक्टर निर्माता कंपनियों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए। इसके अतिरिक्त, Jagatjit ग्रुप, DASMESH (Landforce), चार्ली, फील्डकिंग, Maschio Gaspardo, शक्तिमान और अन्य कृषि उपकरण निर्माता कंपनियाँ भी शामिल हुईं। कृषि कंपनियों जैसे इफको, Yara, BAYER, और PI इंडस्ट्रीज ने भी मेले में भाग लिया। इन कंपनियों ने किसानों को आकर्षक ऑफर प्रदान किए और विशेष कंबाइन हार्वेस्टर भी प्रदर्शित किए। इस वर्ष का PAU किसान मेला बेहद सफल रहा और पंजाब के किसानों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

अब किसानों को ड्रैगन फ्रूट की खेती पर सरकार देगी 40% तक की सब्सिड़ी

अब देश के बहुत से किसान पारंपरिक कृषि से हटकर नए और गैर–पारंपरिक कृषि विधियों की ओर रुख कर रहे हैं। कई किसान फलों और फूलों की खेती पर ध्यान दे रहे हैं और इसमें सफलता भी पा रहे हैं। खासकर विदेशी फलों की खेती किसानों के लिए एक लाभकारी विकल्प बन रही है। किसानों की आय को बढ़ाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें कई योजनाएं चला रही हैं। बिहार सरकार ने ड्रैगन फ्रूट की खेती करने वाले किसानों के लिए 40% तक अनुदान देने की योजना बनाई है। इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए किसान ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

किसानों को कितना अनुदान मिलेगा?

बिहार सरकार कई योजनाओं के माध्यम से किसानों को सहायता प्रदान करती है, जिनमें श्मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजनाश एक प्रमुख योजना है। इस योजना के तहत, ड्रैगन फ्रूट की खेती पर किसानों को 40% यानी 3 लाख रुपये तक का अनुदान प्राप्त होगा। ड्रैगन फ्रूट की खेती पर प्रति हेक्टेयर 7.50 लाख रुपये तक खर्च होता है।

ड्रैगन फ्रूट से 20 वर्षों तक प्राप्त होती है उपज

ड्रैगन फ्रूट की खेती को खास वातावरण की जरूरत नहीं होती और इसे सामान्य तापमान और वर्षा में भी उगाया जा सकता है। यह फल साल में तीन बार फलता है और एक पौधा 45 से 50 फल दे सकता है। एक एकड़ में ड्रैगन फ्रूट की खेती करके 8 से 10 लाख रुपये तक की आमदनी की संभावना है। एक बार बुवाई करने के बाद किसान 18 से 20 साल तक फल प्राप्त कर सकते हैं।

अनुदान की राशि तीन किस्तों में मिलेगी

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए 1 हेक्टेयर में लगभग 5 हजार पौधे की आवश्यकता होती है। मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना के तहत किसानों को अनुदान राशि तीन किस्तों में दी जाएगी: पहली किस्त में 60% यानी 1.80 लाख रुपये, और दूसरी तथा तीसरी किस्त में 20–20% यानी 60–60 हजार रुपये। दूसरी और तीसरी किस्त पाने के लिए खेतों में 75 से 90% पौधे जिंदा रहने चाहिए।

ऑनलाइन आवेदन करना अनिवार्य

ड्रैगन फ्रूट विकास योजना का लाभ उठाने के लिए ऑनलाइन आवेदन अनिवार्य है। ध्यान दें कि इस योजना का लाभ पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर मिलेगा। ऑनलाइन आवेदन के समय किसानों को अपना किसान पंजीकरण, भूमि की रसीद, आधार कार्ड, फोटो और अन्य आवश्यक दस्तावेज तैयार रखना होगा। यह योजना 0.25 एकड़ से लेकर 10 एकड़ तक की भूमि पर ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उपलब्ध है।

इस एक ऐप से किसान खेत की गिरदावरी और निगरानी कर सकेंगे, जानें कैसे

किसान बार–बार कृषि वैज्ञानिकों से खेत और फसल का निरीक्षण करवाते रहते हैं, जिसके लिए उन्हें कृषि विज्ञान केंद्र या फिर कृषि विभाग का दौरा करना होता है। राजस्थान सरकार ने किसानों की इसी समस्या को देखते हुए एक नई योजना शुरू की है। दरअसल, राज्य सरकार ने किसानों के लिए एक उत्कृष्ट ऐप जारी किया है जो खेती की निगरानी और निरीक्षण भी करेगा।

क्या है गिरदावरी करने का ऐप?

यह एक कृषि ऐप है जो किसानों की मदद करेगा। इस ऐप की मदद से किसान दिन–रात खेत की निगरानी कर सकते हैं। ताकि जंगली जानवर फसल को नहीं नुकसान पहुंचा सकें। इसके अलावा किसान इस ऐप का उपयोग करके ऑनलाइन खेती कर सकते हैं।

कैसे काम करता है गिरदावरी ऐप?

आपको राज किसान गिरदावरी ऐप को शुरू करने के लिए अपना आधार नंबर डालकर लॉगिन करना होगा। फिर फसल विवरण जोड़ें पर क्लिक करना है। इसके बाद आपको आधार से संबंधित खाता और खाता खोजने का विकल्प दिखाई देगा। जहां खाते खोजने पर क्लिक करें। किसान को फिर गांव, तहसील और जिला चुनना होगा। ताकि वह इस उपकरण को सही तरह से उपयोग कर सके। फिर किसान को खेत का नंबर दर्ज करके कैलिब्रेट ऑप्शन पर क्लिक करना है। आप गिरदावरी सीजन और फसल चयन प्रक्रिया को देखेंगे जैसे ही आप कैलिब्रेट पर क्लिक करेंगे। जहां आपको अपनी फसल की साफ फोटो अपलोड करनी होगी और खेत का क्षेत्रफल हेक्टेयर में दर्ज करना होगा। किसान को सिंचाई का मुख्य स्रोत और खेत में फलदार पेड़ों की संख्या बताई जाएगी। किसान इस ऐप का उपयोग करके गिरदावरी दे सकते हैं। उन्हें इसके लिए प्रिंट प्रिव्यू के विकल्प पर क्लिक करके अंत में सबमिट करना होगा।

इस तरह किसान की गिरदावरी सबमिट होगी और रजिस्ट्रेशन नंबर मिलेंगे। लेकिन कृपया याद रखें कि किसान की पूरी प्रक्रिया उसी खेत में खड़े रहकर की जानी चाहिए, जिसकी गिरदावरी किसान को करनी है।

Coromandel
FUTURE POSITIVE
Ab sab Fit hai!
GROMOR
FITSOL™
Complete nutrition with just 2 Fertigation grades
GROMOR
FITSOL™
SOLANACEAE
GRADE-1
VEGETATIVE & FLOWERING
N 21
P 12
K 16
S 2
25 Kg
Coromandel
GROMOR
FITSOL™
SOLANACEAE
GRADE-2
FRUITING & MATURITY
N 14
P 5
K 32
S 2
25 Kg

किसान और पशुपालक साइलेज और हे बनाकर दोगुना लाभ कमा सकते हैं

गाय, भैंस या भेड़–बकरी, सभी को चारे की कमी का सामना करना पड़ता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, हरा–सूखा चारा और मिनरल मिक्सर की उपलब्धता में लगातार कमी हो रही है। इस कमी के कारण पशुपालकों को कठिनाई होती है, लेकिन इसके बावजूद उनकी आय दोगुनी हो सकती है। बाजार में चारे की कमी के साथ साइलेज और हे की मांग भी बढ़ गई है। जब हरा चारा प्रचुर मात्रा में होता है, तो उसे साइलेज में बदलकर स्टॉक किया जाता है। देशभर में कई सरकारी संस्थान किसानों और पशुपालकों को हे और साइलेज बनाने की तकनीक सिखा रहे हैं। थोड़ी सी ट्रेनिंग के बाद, किसान और पशुपालक अपने पशुओं को पूरे साल सस्ता हरा चारा प्रदान कर सकते हैं और इसे बेच भी सकते हैं। एनिमल एक्सपर्ट का कहना है कि यह प्रशिक्षण केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा द्वारा प्रदान किया जाता है। इस प्रशिक्षण के बाद, घर पर हे और साइलेज बनाकर चारे की कमी को पूरा किया जा सकता है।

साइलेज और हे बनाने का सही मौसम

फोडर एक्सपर्ट ने किसानों को बताया है कि साइलेज और हे घर पर तैयार करने के लिए विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। तैयार किए गए साइलेज और हे को बिना उचित ट्रेनिंग और एक्सपर्ट की सलाह के पशुओं को न खिलाएं। साइलेज बनाने से पहले, हरे चारे को सुबह काटें ताकि उसे पूरे दिन सूखने का समय मिल सके। साइलेज बनाने के लिए चारे के पत्तों को सूखा होना चाहिए। चारे को सीधे जमीन पर कभी भी न सुख. एएं। इसे लोहे की जाली या स्टैंड पर रखकर सुखाना चाहिए, या छोटे–छोटे गठ्ठर बनाकर लटका सकते हैं। जमीन पर चारा डालने से फंगस लगने की संभावना बढ़ जाती है। साइलेज प्रक्रिया में तब शामिल हों जब चारे की नमी 15 से 18 प्रतिशत रह जाए। और ध्यान रखें कि पशुओं को कभी भी फंगस लगा चारा न दें।

साइलेज और हे बनाने के लिए उपयुक्त फसलें

फोडर एक्सपर्ट के अनुसार, साइलेज बनाने के लिए सही फसल का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। साइलेज बनाते समय चारे में फंगस न लगे, इसके लिए पतले तने वाली फसलों का चुनाव करें। फसल को पकने से पहले काट लें और तनों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर ऊपर बताए गए तरीकों से सुखा लें। पतले तने वाली फसलें जल्दी सूख जाती हैं, जिससे फायदा होता है। नमी की जांच के लिए तने को हाथ से तोड़कर देखें।

ताकत, किफायत और भरोसे के साथ
प्रीत सुपर ही है
सबसे ऊपर
PREET
SUPER
9049 4WD
PREET
PREET
#BetterFutureIsHere

सफेद मूसली की खेती: औषधीय गुण, उन्नत खेती तकनीक और लाभकारी खेती के तरीके

सफेद मूसली, जिसे अंग्रेजी में "White Musli" या "Safed Musli" कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है जो मुख्य रूप से भारत में उगाया जाता है। इसकी खेती विशेष रूप से आयुर्वेदिक दवाओं के लिए की जाती है क्योंकि इसमें कई औषधीय गुण होते हैं। भारत में इसकी खेती मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश में ज्यादा की जाती है। किसान इसकी खेती करके अच्छा मुनाफा कमा सकते है।

सफेद मूसली के औषधीय गुण

सफेद मूसली (Safed Musli), जिसका वैज्ञानिक नाम Chlorophytum borivilianum है, एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है जिसे आयुर्वेदिक चिकित्सा में कई समस्याओं के इलाज के लिए प्रयोग किया जाता है। इसके औषधीय गुण इसे विभिन्न स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं।

इसके कुछ औषधीय गुण निम्नलिखित है:

सफेद मूसली शरीर में हार्मोनल संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। यह विशेष रूप से टेस्टोस्टेरोन के स्तर को बढ़ाने में सहायक होता है और स्त्री हार्मोन असंतुलन को भी सुधारने में मदद करता है।

- इसमें एंटीऑक्सीडेंट तत्व होते हैं जो शरीर को मुक्त कणों से होने वाली क्षति से बचाते हैं। यह उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने और सामान्य स्वास्थ्य बनाए रखने में सहायक होता है।
- सफेद मूसली में सूजन और दर्द को कम करने वाले गुण होते हैं, जो गठिया और अन्य सूजन संबंधी समस्याओं के इलाज में उपयोगी हो सकते हैं।
- यह पाचन तंत्र को सुधारने में मदद करता है और अपच, गैस, और अन्य पाचन समस्याओं से राहत प्रदान करता है।

सफेद मूसली की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

सफेद मूसली की बुआई जून–जुलाई माह के 1–2 सप्ताह में की जाती है, जिसका कारण इन महीनों में प्राकृतिक वर्षा होती है अत: सिंचाई की कोई आवश्यकता नहीं होती है। इसकी खेती के लिए गर्म तथा नम जैल्यु की आवश्यकता होती है। इसकी खेती वैसे तो कई प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है परन्तु इसकी खेती के लिए हल्की दोमट मिट्टी जिसमें उचित जल निकासी की व्यवस्था हो उसे उत्तम मानी जाती है।

बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

सफेद मूसली की खेती के लिए जमीन को 2 – 3 बार 30 – 40 सेंटीमीटर तक जोत लेना चाहिए। जिससे की भूमि अच्छे से नरम और भुरभुरी हो जाती है। जुताई के समय खेत में 30 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिला दें।

बुवाई के लिए पौध की तैयारी

सफेद मूसली की खेती बीज तथा कंद दोनों से की जा सकती है। बीज द्वारा खेती के लिए 18 – 20 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बीज से बोई की गयी फसल में अंकुरण बहुत कम (14 –16 प्रतिशत) होता है। इसलिए इसकी खेती कंद लगाकर करनी चाहिए। कंद से पौधे तैयार करने के लिए स्वस्थ कंदो का प्रयोग करना चाहिए। कंदो या गाठों को रोपाई से पहले बीजोपचार द्वारा तैयार करना चाहिए। एक अकड़ में रोपाई के लिए लगभग 5 या 5.5 क्विंटल कंदो की आवश्यकता होती है।

सफेद मूसली का रोपण

सफेद मूसली के रोपण के लिए जून का प्रथम सप्ताह अच्छा माना जाता है या अगर हल्की वर्षा हो जाती है तो उस समय भी इसकी बुवाई कर लेनी चाहिए। सफेद मूसली के पोधो को 10 इंच दुरी पर लगाना चाहिए। पोधो को जमीन में 1 इंच की गहराई तक लगाना चाहिए।

सिचाई एवं निराई

सफेद मूसली एक खरीफ की फसल है इसलिए इसको अधिक सिंचाई की आवश्यता नहीं होती है। यदि लंबे समय तक वर्षा नहीं होती है तो 15 दिन के अंतराल पर फसल में सिंचाई अवश्य करें। फसल में खरपतवारों से बचाव के लिए समय समय निराई गुड़ाई के कार्य करते रहना चाहिए।

सफेद मूसली की खुदाई

नवंबर माह में इसकी फसल तैयार हो जाती है। नवंबर में इसकी खुदाई की जाती है, प्रत्येक पौधे में लगभग 10 से 12 कंद प्राप्त होते है। खुदाई से पहले खेत में हल्की सिंचाई करें जिससे की आसानी से कंद मिट्टी से बहार निकाले जा सकें। प्रति एकड़ सूखे कंद की उपज 3 से 3.5 क्विंटल तक प्राप्त होती है। बाजार में इनका रेट 600 रूपए से 1500 रूपए प्रति किलो तक मिल जाता है।

NDRF कैंप गाजियाबाद में जैविक एवं प्राकृतिक खेती पर क्षेत्रीय सम्मेलन का भव्य आयोजन

राष्ट्रीय जैविक और प्राकृतिक खेती केंद्र, गाजियाबाद ने 20 सितंबर को रसायन मुक्त (जैविक एवं प्राकृतिक) खेती पर क्षेत्रीय परामर्शध्सम्मेलन का भव्य आयोजन छक्त्थ कैंप गाजियाबाद में किया गया। आयोजन का मुख्य विषय रसायनिक खेती की जगह जैविक खेती को प्रोत्साहन देना रहा। मृदा के निरंतर होते क्षरण और मानव स्वास्थ में गिरावट के चलते इस कार्यक्रम में जैविक खेती के लाभकारी गुणों की चर्चा की गई। इस भव्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि – श्री नामदेव उप कमांडेंट, 8वीं बटालियन एनडीआरएफ गाजियाबाद, विशेष अतिथि – डॉ. गंगेश शर्मा, निदेशक, राष्ट्रीय जैविक और प्राकृतिक खेती केंद्र, गाजियाबाद, आयोजक – श्री रवींद्र कुमार, क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय जैविक और प्राकृतिक खेती केंद्र, गाजियाबाद, सह आयोजक– डॉ. विपिन कुमार, प्रभारी अधिकारी, केवीके जीबीनगर, डॉ. प्रवीण कुमार सीईओ नरसेना ऑर्गेनिक फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड बुलंदशहर मौजूद रहे।

साथ ही, बहुत सारे प्रगतिशील किसान भी मौजूद रहे, जिनमें ओमवीर सिंह ग्राम बम्बावार्ड, शिव कुमार ग्राम खुर्शादपुरा, रामफल ग्राम धनुवाश, मुनेन्द्र चौधरी ग्राम खेन्द्रा, युद्धवीर ग्राम दुजाना, सुमित त्यागी ग्राम कचरा, संजीव प्रेमी ग्राम रूपवास, मुकेश नगर ग्राम बम्बावार्ड, भूरा त्यागी ग्राम बयाना, विनोद चौहान जिला आठ, श्रीमती हितेश चौधरी जिला अमरोहा आदि हजारों किसान मौजूद रहे।

कृषि वैज्ञानिकों ने जैविक खेती से होने वाले कई तरह के लाभों के बारे में भी बताया

- जैविक खेती से भूमि की उपजाऊ क्षमता बढ़ती है।
- जैविक खेती से सिंचाई की जरूरत कम होती है।
- जैविक खेती से रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होती है, जिससे लागत में कमी आती है।
- जैविक खेती से फसलों की उत्पादकता बढ़ती है।
- जैविक खेती से बाजार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ती है, जिससे किसानों की आय बढ़ती है।
- जैविक खेती से पर्यावरण को फायदा होता है। जैविक खेती से गैर–नवीकरणीय ऊर्जा के इस्तेमाल में कमी आती है।
- जैविक खेती से मिट्टी में कार्बन अलग होता है, जिससे ग्रीनहाउस प्रभाव और ग्लोबल वार्मिंग कम होती है।
- जैविक खेती से रासायनिक उर्वरकों और दवाओं के नुकसान से बचा जा सकता है।
- जैविक खेती से खेती में सूक्ष्म जीवों, मृदा पादपों, और दूसरे जीवों के जैविक चक्र को बढ़ावा मिलता है।

कृषि वैज्ञानिकों ने रासायनिक खेती से होने वाले कई तरह के नुकसान बताए

मिट्टी की गुणवत्ता पर असर

रासायनिक खादों के इस्तेमाल से मृदा की उर्वरक शक्ति कम हो जाती है। मिट्टी में अम्ल की मात्रा काफी बढ़ जाती है और जिंक और बोरान जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो जाती है। मिट्टी कठोर हो जाती है और बैक्टीरिया और अन्य सूक्ष्म जीव मर जाते हैं।

जल प्रदूषण

रासायनिक खादों और कीटनाशकों का इस्तेमाल करने से खेतों से निकलने वाला अपवाह नदियों, झीलों और महासागरों में पहुँचता है। इससे जल प्रदूषण होता है और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है।

मानव स्वास्थ्य पर असर

कृषि रसायनों से कैंसर होने की आशंकाएं काफी बढ़ जाती हैं। कई अध्ययनों में पाया गया है, कि इनसे ल्यूकेमिया, लिम्फोमा, मस्तिष्क, गुर्दे, स्तन, प्रोस्टेट, अग्न्याशय, यकृत, फेफड़े और त्वचा के कैंसर हो सकते हैं।

जैव विविधता पर असर

कीटनाशकों और अन्य रसायनों के इस्तेमाल से उस इलाके के सभी कीट और पौधे प्रभावित होते हैं। लंबे समय तक ऐसा होने पर उस इलाके से कीटों और पौधों की कई प्रजातियां उजड़ जाती हैं।

कीट–पतंगों और केंचुओं पर असर

रासायनिक खादों से कीट–पतंगे नष्ट होते हैं और मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने वाले केंचुए को भी नुकसान पहुंचता है।

जलवायु परिवर्तन का गेंहू की खेती और उत्पादन पर क्या प्रभाव होता है?

आजकल जलवायु में हो रहे परिवर्तन खेती को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं, खासकर रबी फसलों पर। जलवायु, किसी क्षेत्र में मौसम की औसत स्थिति है जो पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करती है। औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के चलते जंगलों की कटाई हो रही है और जलवायु बदल रही है। इस बदलाव से पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बिगड़ता है, जिससे पौधों की उत्पादकता और स्थिरता पर असर पड़ता है, क्योंकि पौधे ऊर्जा प्रदान करने वाले उत्पादक हैं।

गेहूं की खेती पर प्रभाव

गेहूं एक प्रमुख भोजन है जो तापमान और CO2 की वृद्धि से प्रभावित होता है। इससे न केवल गेहूं की पैदावार पर असर पड़ता है, बल्कि गेहूं बीमारियों का भी शिकार होता है। उच्च तापमान वाष्पोत्सर्जन की अधिक दर को जन्म देता है, जिससे सूखा और कम उत्पादकता होती है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दुनिया के 60% गेहूं उगाने वाले क्षेत्रों में गंभीर सूखा पड़ सकता है, जैसा कि एक मॉडल से पता चला है।

सूखा और गेहूं की उत्पादकता

वर्तमान में सूखा गेहूं की उत्पादकता को 15% तक प्रभावित करता है। भविष्यवाणी की गई है कि तापमान में हर 2°C वृद्धि से अगले 20 से 30 वर्षों में पानी की गंभीर कमी हो सकती है। दूध निकलने और दाना भरने के चरण में पानी की कमी से उपज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इस अध्याय में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, गेहूं की वृद्धि, उपज, CO2 वृद्धि, रोगों की गंभीरता, तापमान वृद्धि के पूर्वानुमान मॉडल और 2050 में CO2 के प्रभाव पर चर्चा की गई है।

गेहूं की वृद्धि और उत्पादन पर प्रभाव

अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जलवायु परिवर्तन का सीधा असर फसल की पैदावार पर पड़ता है। तापमान में हर 1°C वृद्धि से विकास गुण घटते हैं और उपज में कमी आती है। मौसम के तापमान में व्यापक बदलाव दर्ज किया गया है, और वैश्विक जलवायु परिवर्तन के लिए 100 साल के फसल मॉडल और आंकड़ों के आधार पर गेहूं की उपज पर इसके प्रभाव की भविष्यवाणी की जाती है।

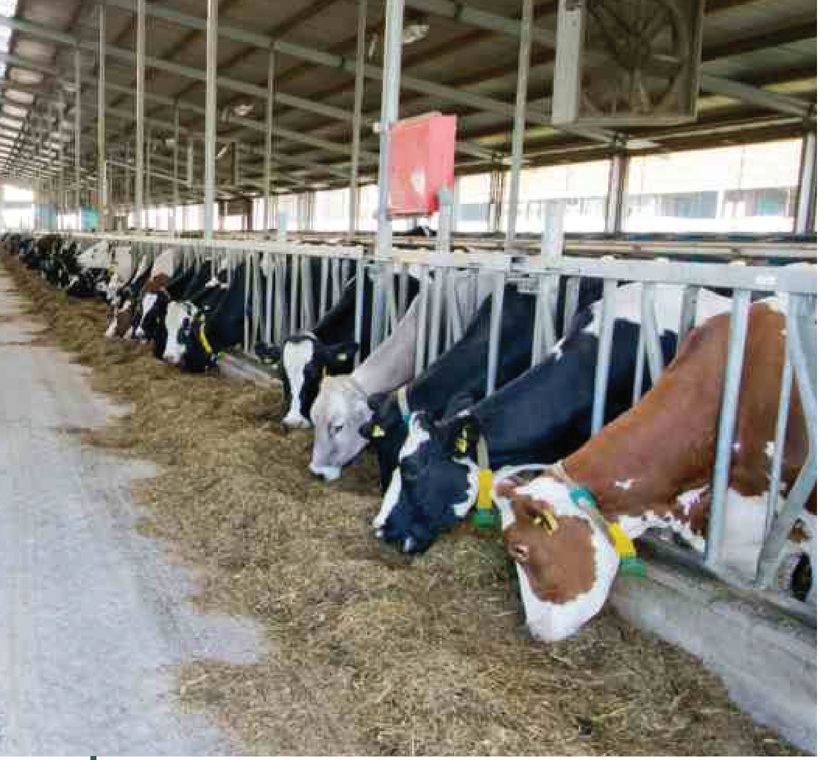

10वीं पास लवलेश कुमार ने दुग्ध उत्पादन में बनाया रिकॉर्ड, जानिए इनकी कहानी

भारत एक कृषि प्रधान देश है, खेती के साथ पशुपालन करके भी किसान अच्छा मुनाफा कमाते हैं। इस क्षेत्र में कई पशुपालकों ने नए आयाम स्थापित किए हैं। आज के इस लेख में हम आपको इस किसान की कहानी बताएंगे। जी हां हम यूपी के बाराबंकी के एक किसान की सफल कहानी बताने जा रहे हैं। लवलेश कुमार देसी गायों को पालकर डेयरी खेती से हर साल चार से पांच लाख रुपये मिलते हैं। इस किसान का नाम है लवलेश कुमार, जो सिर्फ दसवीं क्लास में है और बाराबंकी के गणेशपुर गांव के उधौली गांव का रहने वाला है। India टुडे के किसान से बातचीत में लवलेश ने कहा कि हम 2000 से पशुपालन कर रहे हैं, लेकिन 2017 से पराग डेयरी से जुड़े हैं। इस समय 18 साहीवाल गाये जा रहे हैं। उनका कहना था कि एक दिन में सुबह–शाम मिलाकर 80 से 90 लीटर दूध बनाया जाता है।

साहीवाल नस्ल की गाय से शुरू किया था काम

गणेशपुर के उधौली गांव निवासी लवलेश कुमार बताते हैं कि 2017 से हमारा दूध पराग डेयरी को जा रहा है, इसलिए हम स्थानीय बाजार में दूध नहीं बेचते। 10वीं तक पढ़ाई करने के बाद, लवलेश कुमार ने डेयरी खेती करने की ओर रुझान देखा। हम हरियाणा के जींद जिले से एक साहीवाल गाय लाए थे। उस समय एक गाय 80 हजार रुपये की कीमत थी। धीरे–धीरे गायें बढ़ी। वर्तमान में मेरे पास 18 साहीवाल गाय हैं।

2,700 लीटर तक करते हैं एक महीने में दूध का उत्पादन

किसान लवलेश ने योगी सरकार को गोबर खरीदकर कंपोस्ट खात बनाने का प्लांट लगाने की अपील की। यह दूसरा गोबर का सही इस्तेमाल करेगा, जिससे हमारे लोगों की आय भी डबल होगी। सालाना आय के सवाल पर, उन्होंने बताया कि एक महीने में 2,700 लीटर दूध की पैदावार होती है। एक लीटर दूध 40 से 45 रुपये में बिक जाता है। वहीं बीमार गाय दूध नहीं देतीं। ऐसे में एक साल में चार से पांच लाख रुपये की कमाई होती है।

पशुपालक लवलेश ने बताई साहीवाल गाय की खासियत

लवलेश ने बताया कि साहीवाल गाय लाल और गहरे भूरे रंग की होती है, और कभी–कभी सफेद चमकदार धब्बे भी दिखाई देते हैं। इसे ढीली चमड़ी के कारण लोला भी कहते हैं। नर साहिवाल की पीठ पर बड़ा कूबड़ है, जिसकी ऊंचाई 136 सेमी है, जबकि मादा 120 सेमी। पुरुष गाय का वजन 450 से 500 किलो और मादा गाय का वजन 300 से 400 किलो होता है। साहीवाल गाय एक दिन में 10 से 16 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है एक दुग्धकाल के दौरान ये गायें औसतन 2270 लीटर दूध देती हैं।

mahindra
TRACTORS
TOUGH HARDUM
माइलेज शानदार,
पावर दमदार
Mahindra
275DI TU
XP PLUS
29.1 kW (39 HP)

MERIKHETI

किसानो की बात मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali, Sector -1, Ghaziabad - 201010